भण्डारण भारती

अंक–71

केन्द्रीय भण्डारण निगम

जन-जन के लिए भंडारण

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

एकीकृत प्रबंधन प्रणाली नीति

क्यूएमएस, ईएमएस तथा ओएचएसएमएस

केन्द्रीय भण्डारण निगम ग्राहक अनुकूल, कुशल, पारदर्शी प्रणाली के माध्यम से वैश्विक मानक स्तर की वेअरहाउसिंग तथा लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान कराने के लिए प्रतिबद्ध है और पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अपनी सभी गतिविधियां संचालित करता है।

हम निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अपनी सेवाओं में निरंतर सुधार करते हुए वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक के क्षेत्र में अग्रणी बनने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

- ग्राहकों एवं इच्छुक पार्टियों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उनकी संतुष्टि बढाने के लिए आईएसओ **9001 : 2015**, आईएसओ **14001 : 2015** एवं आईएसओ **18001 : 2007** के अनुसार प्रभावी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली को कार्यान्वित करना।
- स्वीकार्य स्तर तक सभी प्रक्रियाओं में जोखिमों को कम करना ताकि अनिश्चितता के प्रभावों को कम किया जा सके।
- सभी लागू विधिक आवश्यकताओं का अनुपालन करना।
- सभी स्थानों पर प्रदूषण रोकना, पर्यावरण की देखभाल करना तथा महत्वपूर्ण पहलुओं को न्यूनतम करना।
- सुरक्षित एवं बेहतर कार्य पद्धतियां सुनिश्चित करना ताकि विद्यमान जोखिमों के कारण शारीरिक क्षति तथा बीमारी को कम किया जा सके ।
- संसाधनों का समुचित उपयोग करना ।
- कर्मचारियों की सक्षमता को बढाना ।
- सभी कर्मचारियों की संपूर्ण भागीदारी तथा योगदान सुनिश्चित करना।
- हमारी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली में निरंतर सुधार ।

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबन्ध निदेशक

दिनांक : 05.10.2018

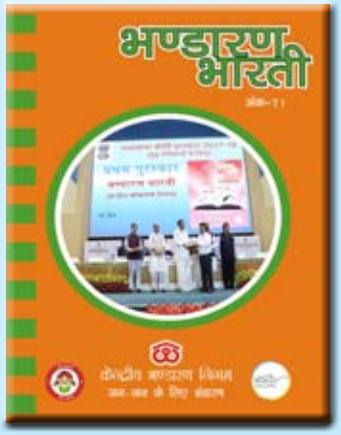

अक्तूबर-दिसम्बर, 2018

मुख्य संरक्षक
अरुण कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता
अरविन्द चौधरी
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे
एस.पी. तिवारी

संपादन सहयोग
नीलम खुराना, विजयपाल सिंह,
शशि बाला

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका — अंक-71

	विषय	पृष्ठ संख्या
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	03
✦	सुस्वागतम्	04
✦	विचारों के झरोखे से...	05
✦	सम्पादकीय	06
आलेख		
❍	निगम में पैस्ट कंट्रोल सेवाएं... – *डॉ. सिद्धार्थ रथ*	07
❍	शिक्षा, धर्म और समाज – *सच्चिदानन्द राय*	09
❍	कार्यालयी पत्र व्यवहार... – *महिमानन्द भट्ट*	20
❍	महान कर्मयोगिनी अहिल्याबाई होलकर – *डॉ. मीना राजपूत*	32
❍	विविध सेवाकालीन प्रशिक्षण– *एस.पी. तिवारी*	37
❍	मेरा लक्ष्य-भष्टाचार मुक्त भारत – *प्रसून कुमार झा*	41
क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय		
✶	क्षेत्रीय कार्यालय-मुंबई	16
कविताएं		
✪	वंदन – *निर्भय नारायण गुप्ता*	08
✪	सुबह की धूप से.... – *विनीत निगम*	08
✪	*नारीत्व –पारस नाथ सिंह*	31
✪	*मैं हिन्दी हूँ मैं नारी हूँ – मीनाक्षी गुप्ता*	38
✪	*हर आंकड़ा शुभ आंकड़ा – बलवन्त रंगीला*	40
✪	*शहीद चंद्रशेखर आजाद – गौरव दत्त*	42
साहित्यिकी		
➲	गंगा बाबू कौन? (संस्मरण) – *गौरा पन्त शिवानी*	24
विविध		
➢	स्वच्छता से स्वास्थ्य की ओर – *रोहित उपाध्याय*	11
➢	बेटियों का समाज में... – *रामसेवक मौर्य*	18
➢	कर्मफल – *रेखा दुबे*	23
➢	रंगीलो गुजरात... – *नम्रता बजाज*	26
➢	द्वादश ज्योतिर्लिंग – *पी.एस. गुसाईं*	28
➢	मन के हारे हार है... – *देवकी वी. चतुरानी*	39
✸	सचित्र गतिविधियाँ	43

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

नववर्ष, 2019 का स्वागत करते हुए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ 'भंडारण भारती' पत्रिका का 71वाँ नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस नूतन वर्ष में नवीन उत्साह के साथ आगे बढ़ते हुए हम भविष्य में भी उत्कृष्ट कार्य करके निगम को प्रगति पथ पर ले जाने का संकल्प लेते हैं।

निगम वैज्ञानिक भंडारण के क्षेत्र में अपनी विशेष सक्षमता के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता को पूरा कर रहा है। यह किसानों, व्यापारियों, सहकारी समितियों, केन्द्र और राज्य सरकार की एजेन्सियों, छोटे और बडे उद्योगों, आयातकों और निर्यातकों को वेअरहाउसिंग और संबंधित लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान कर रहा है। वेअरहाउसिंग व्यापार के अतिरिक्त केंद्रीय भंडारण निगम अपने सक्षम और प्रतिबद्ध कार्मिकों के साथ सीएफएस आईसीडी व्यापार, कंटेनर रेल ट्रांसपोर्टशन, पैस्ट कन्ट्रोल और एकीकृत चैक पोस्ट के प्रबंधन जैसे विविध क्षेत्रों में भी कार्य कर रहा है। निगम में सभी वेअरहाउसों में सुधार और अपग्रेडेशन का कार्य, वेअरहाउसिंग क्षमता का विस्तार, रेल लिंक वेअरहाउसों में निजी फ्रेट टर्मिनलों (पीएफटी) को स्थापित किया जाना, ग्राहकों की मांग के अनुसार इन्वेंटरी मैनेजमेंट, बिलिंग और डिस्ट्रिब्यूशन जैसी और अधिक वैल्यू एडिड सेवाएं प्रदान करना, वेअरहाउसिंग और ई–बिजनेस की बढ़ती संभावनाओं का लाभ उठाकर अपने वेअरहाउसों में स्थान उपलब्ध कराने जैसे कार्य करने के प्रयास किए जा रहे हैं। निगम ने सीटीटी, थिरुवोट्टियूर में चेन्नई पोर्ट ट्रस्ट के साथ मिलकर डायरेक्ट पोर्ट एंट्री की सुविधा के साथ प्रचालन आरंभ किया है। अतः निगम के लक्ष्य, दूरदर्शिता और उद्देश्यों के अनुरूप हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम निगम की नीतियों का पालन करते हुए अपनी सेवाओं को उत्कृष्ट बनाने के लिए पूरी लगन, मेहनत एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करें।

निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि निगम को **कॉस्ट एकाउंटिंग** के क्षेत्र में **तृतीय पुरस्कार** प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही निगम ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सी एंड एजी) से लगातार 10वें वर्ष भी ''शून्य टिप्पणी'' की रिपोर्ट प्राप्त की है जो हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है जिसे हमें आगे भी कायम रखना है। यह गर्व का विषय है कि निगम ने इस वर्ष राजभाषा के क्षेत्र में नई उपलब्धियों को हासिल किया है जिसके तहत राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 14 सितंबर, 2018 को **हिंदी दिवस** के अवसर पर वर्ष 2017–18 के लिए **भंडारण भारती** पत्रिका को **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार** (गृह पत्रिका) के अंतर्गत 'क' क्षेत्र में **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली से भी इस पत्रिका को वर्ष 2017–18 के लिए **प्रथम पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है। निगम को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री के करकमलों से भी वर्ष 2017–18 के लिए **द्वितीय पुरस्कार** प्रदान किया गया। अन्य विविध कार्यकलापों के साथ–साथ अंशधारियों की 56वीं वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा ''भण्डारण भारती–राजभाषा विशेषांक'' (अंक 70) का विमोचन किया गया। इस प्रकार राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए निगम में सभी स्तरों पर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। हमें आशा है कि सभी के प्रयासों से निकट भविष्य में निगम कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होगा।

निगम निगमित सामाजिक दायित्व के कार्यों के प्रति भी अत्यंत प्रतिबद्ध है जिसके तहत स्कूलों, दिव्यांगों तथा स्वास्थ्य सुविधाओं आदि के अतिरिक्त स्वच्छ भारत कोष और गंगा पुर्नद्धार के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। 'स्वच्छ भारत अभियान' के अंतर्गत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर इस वर्ष भी निगमित कार्यालय में दिनांक 15 सितंबर, 2018 से 02 अक्तूबर, 2018 तक 'स्वच्छता पखवाड़ा' (स्वच्छता ही सेवा) का आयोजन किया गया। दिनांक 29 अक्तूबर से 03 नवंबर, 2018 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का आयोजन किया गया जिसका विषय था "भ्रष्टाचार मिटाओ – नया भारत बनाओ"। इस अवसर पर 'सतर्कता–एक परिदृश्य' पुस्तिका प्रकाशित की गई।

इस पत्रिका के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन के लिए मेरा निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि वे पत्रिका के लिए अपने अनुभव के आधार पर लेख लिखकर इसमें अपना योगदान दें तथा विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे नए विकास कार्य, गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी प्रकाशन के लिए भेजा जाए ताकि निगम के कार्यकलापों की जानकारी सभी को प्राप्त हो सके।

एक बार पुनः नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(अरुण कुमार श्रीवास्तव)
प्रबंध निदेशक

सुस्वागतम्

केन्द्रीय भंडारण निगम, मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद पर दिनांक 01.11.2018 को कार्यभार ग्रहण करने पर श्री प्रणय प्रभाकर का हार्दिक अभिनंदन करता है। आप भारतीय रेल यातायात सेवा के 1991 बैच के अधिकारी हैं। आप जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से कला (अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन) में परास्नातक हैं तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम.फिल (अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति) और जमनालाल बजाज इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमैंट स्टडीज, मुम्बई विश्वविद्यालय से एम.बी.ए. हैं। आपने सर्वप्रथम 1994 में पश्चिम रेलवे, बड़ौदा में क्षेत्रीय अधिकारी का पदभार ग्रहण किया। आपने मुम्बई मंडल में वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबन्धक, पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, महाप्रबन्धक पश्चिम रेलवे के सचिव, पश्चिम रेलवे के मुख्य यातायात योजना प्रबन्धक, कॉनकोर, अहमदाबाद में मुख्य महाप्रबन्धक जैसे पदों पर कार्य किया। आप मुम्बई से अहमदाबाद के बीच हाई स्पीड रेल (बुलेट ट्रेन) तथा मुम्बई से दिल्ली के मध्य डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर परियोजना से जुड़े रहे।

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि श्री प्रणय प्रभाकर द्वारा विभिन्न विभागों में किए गए कार्य के गहन अनुभव का पूरा लाभ निगम को प्राप्त होगा और उनके मार्गदर्शन में निगम सतर्कता के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

केन्द्रीय भंडारण निगम परिवार मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद पर कार्यभार संभालने के लिए उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई देता है।

विचारों के झरोखे से...

राष्ट्रे जाग्रयामः वयम्
त्वम् नो असि भारतः (ऋग्वेद 2.7 सूक्त)
"हे भारत, तुम हमारे हो।"

निघण्टु के आधार पर 'भा' शब्द के कई अर्थ है। 'भा' का अर्थ है प्रकाश 'ज्योति' तेजस्विता, आत्मदीप्ति। अतः 'भा' सूर्य है जो प्रातः उदित हो प्रकृति के कण–कण को भासित कर देता है। 'भा' जीवात्मा है जो शरीर में प्राण फूंक देता है। 'भा' आग्नेय परमात्मा है, वह सत्तावान शक्ति है जो जीवनों को आत्मदीप्ति से युक्त कर देती है। 'भा' वह भारत है जो भारतीयों के हृदय में धड़कता है, श्वासों में चलता है, जो 'भा' में रत जनों को ब्रह्मपद का अधिकारी बना देता है।

अतः **"हे भारत, तुम हमारे हो।"**

भारत देश जड़ मिट्टी का समुदाय नहीं। नदियों का समुच्चय मात्र नहीं। यह विश्वचेतना परमात्मा की, साक्षात् प्रतिमा है। यह हमारी मां है। प्रत्येक देश की पवित्र भूमि वहां के राष्ट्रीय जनों की माँ होती है, शक्ति होती है चेतना होती है। इसी प्रकार भारत हमारी मां है जिसकी रक्षा हमें करनी है। मातृभूमि की रक्षा करने वाले वह महान सैनानी होते है जो प्राण हथेली पर लेकर चलते हैं। मोर्चे–मोर्चे पर लड़ सकते हैं, जिन्हें मृत्यु का भय नहीं। ये रणक्षेत्र में विजय पाने वाले हँसते–हँसते बलिदान हो जाने वाले रणबांकुरे किसी भी सिद्ध योगी से महान होते हैं जो मोक्ष के परमपद को प्राप्त हुए होते हैं। ऐसे ही पराक्रमी योद्धाओं की छत्रछाया में ही राष्ट्र निर्भय होता है।

देश के रखवाले तो अपना धर्म निभाते हैं। आज जरूरत है ऐसे राष्ट्र नायक की, ऐसे सु–शासक की जो शतक्रतु हो– जो देश के नागरिकों से सौ गुणा अधिक गुण सम्पन्न हो, जो आत्मविश्वास से पूर्ण हो, जिसमें नैतिक साहस हो। जो राष्ट्र को सही दिशा देकर उन्नत कर सके। जो राष्ट्र के भीतरी और बाहरी शत्रुओं से लोहा लेता हुआ राष्ट्र उत्थान के लिए सदा जाग्रत रहे, सजग रहे।

ऐसे राष्ट्र नायक के लिए जरूरी है वह राष्ट्र में फैली गंदगी का निवारण करें। द्वेष, अपराध, भ्रष्टाचार, दलबंदी, राष्ट्र की संपत्तियों को हडपना ऐसे घुन हैं जिन्होंने राष्ट्र को खोखला कर दिया है। अनुशासन–हीनता सड़कों पर देख सकते हैं। सारा देश खोखली वाणी से भरा है राष्ट्र को इस दुरावस्था से बचने के लिए जरूरत है– कठोर शासन और अनुशासन की। इसके लिए चाहिए– आत्मिक और भौतिक बल, जिससे अमानुषता का नाश कर मानवता की स्थापना की जा सके।

एक बार ओशो से किसी ने पूछा– " गुरूजी, वह कौन सा सपना है जिसे साकार करने में आप तमाम रूकावटों और बाधाओं को नज़रअंदाज कर निरंतर क्रियाशील है," ओशो का जवाब इस प्रकार से थाः–

" सपना तो एक ही है, मेरा, तुम्हारा, हर किसी का। सदियों पुराना, कहें कि सनातन है। पृथ्वी के इस भू-भाग में सभी ने इस सपने को देखा। उस सपने को मैं कैसे अपना कहूँ? इस सपने को हमने एक नाम दे रखा है । हम इस सपने को भारत कहते हैं।"

यूं प्रत्येक व्यक्ति एक राष्ट्र है। हम हिंदु, सिख, ईसाई, पारसी नहीं, हम गरीब अमीर नहीं, हम अल्पसंख्यक नहीं। हम सब एक ही प्रकार के गुणों से युक्त सख्यभाव से जुड़े हैं, बस, राष्ट्र में हमें एकजुट होना है। मिलकर मातृभूमि के प्रति उत्तरदायित्व को निभाना है। ऋषि ने कहा है, "**अमृतस्य पुत्रः" -हे अमृत के पुत्रों** !! जिसने इस उद्घोष को सुना वे ही सब भारत के नागरिक हैं। केवल भारत में पैदा होने से कोई भारत का निवासी नहीं हो सकता। यह भारत ही है जहां प्रत्येक जीव के भीतर परमात्मा को बिठाकर उसे मंदिर बना दिया है। बस, सामने एक अमृतपथ खुला है। अपने अंदर एक बार उड़ने की चाह पैदा करनी है। अपनी आंतरिक गरिमा और गौरव को पुनः जागृत करना है ताकि हम सब मिलकर अपनी हिमाच्छादित ऊँचाईयों को पुनः पा लें।

(अरविन्द चौधरी)
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

संपादकीय

निगमित कार्यालय द्वारा इस पत्रिका के वर्ष में चार अंक प्रकाशित किये जाते हैं। वर्ष 2018 में इस पत्रिका के दो विशेषांक तथा एक सामान्य अंक प्रकाशित हो चुका है। अक्तूबर से दिसम्बर, 2018 का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

पत्रिका प्रकाशन का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, इसलिए प्रत्येक अंक को विविधता के साथ प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य रहता है। निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक क्षमता को आगे बढ़ाने में यह पत्रिका अपना अमूल्य योगदान दे रही है और हमें प्रसन्नता है कि इस पत्रिका में प्रकाशनार्थ उनके उपयोगी लेख एवं कविताएं हमें प्राप्त होती रहती हैं। इससे यह भी प्रतीत होता है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लेखन क्षमता में वृद्धि हो रही है। निगम द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला एवं अन्य आयोजनों के दौरान हम सभी से इस पत्रिका में योगदान देने के लिए आग्रह करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह पत्रिका समृद्ध होती जा रही है और इसी का परिणाम है कि निगम को इस वर्ष 14 सितम्बर, 2018 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन के लिए राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अंक में पीसीएस सेवाएं, सेवाकालीन प्रशिक्षण, कार्यालय पत्र व्यवहार एवं अनुवाद, स्वच्छता आदि विषयों सहित विविध आलेख प्रकाशित किए गये हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि पिछले अंकों की भाँति यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर, पठनीय और ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगा।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

निगम में पैस्ट कंट्रोल सेवा की विभिन्न गतिविधियाँ

डॉ. सिद्धार्थ रथ*

केंद्रीय भंडारण निगम वैज्ञानिक भंडारण सेवा के साथ उत्कृष्ट पैस्ट कंट्रोल सेवा पिछले 60 साल से प्रदान करता आ रहा है। इस सेवा से निगम को लगभग 20.00 करोड़ रूपये की आय अर्जित होती है। इसको एक प्रमुख सेवा में बदलने के लिये और इसका लक्ष्य बढ़ाकर 100.00 करोड़ रुपये करने के लिये पी.सी.एस. विभाग ने जुलाई 2018 से बहुत प्रयास किया है। इनमें से कुछ इस प्रकार है–

(1) **अलग मार्केटिंग सैल –**
सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में पी.सी.एस. सेवा के कामकाज के संचालन के लिये अलग–से मार्केटिंग सैल बनाये गये हैं। यह सैल मार्केटिंग, कांट्रैक्ट, एम.ओ.यू., रसायन व उपकरण की व्यवस्था और एम.आई.एस. की देख–रेख में कार्य करेंगे।

(2) **25 प्रमुख कार्यकारी सैल–**
पी.सी.एस. सैल का गठन कर इसे चलाने के लिये 25 प्रमुख शहरों का चयन किया गया व उससे संबंधित प्लैटफार्म तैयार कर लिया गया है।

(3) **डी.ओ.पी. –**
पी.सी.एस. कार्य हेतु नई डी.ओ.पी. को सभी स्तर के लिये तैयार किया गया है ताकि पी.सी.एस. कार्य सही तरीके से बिना किसी बाधा के चल सके।

(4) **इंसैंटिव पॉलिसी–**
आकर्षित इंसैंटिव पॉलिसी पर भी कार्य किया गया है।

(5) **टैरिफ –**
पी.सी.एस. के ग्राहकों के लिये एक साधारण दर (टैरिफ) की व्यवस्था कर वैबसाइट पर उपलब्ध करवा दी गई है।

(6) **ड्राफ्ट एम.ओ.यू. –**
ड्राफ्ट एम.ओ.यू. को तैयार कर वैबसाइट पर अपलोड करवा दिया गया है।

(7) **पंजीकरण –**
GEM जैम (पोर्टल) एवं विक्रेता पंजीकरण हेतु निगम को सर्विस प्रोवाइडर के रूप में पंजीकृत किया गया है ।

(8) **पी.सी.एस. निविदाओं की सूचना –**
(टेंडरटाइगर) के साथ एक और नई टेंडर ऐजेंसी (टेंडर 247.कॉम) को भी शामिल किया गया है। जिससे प्रतिदिन पी.सी.एस. निविदाओं की सूचना प्राप्त होती है और संबंधित क्षेत्रीय कार्यालयों में भेजी जाती है। इसके द्वारा पी.सी.एस. निविदाओं में भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है।

* सहायक महाप्रबन्धक (पीसीएस), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

(9) **पी.सी.एस. प्रशिक्षण –**

सभी पी.सी.एस. सैलों के मुख्य पर्यवेक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य भी पूरा कर लिया गया है, जिसमें उन्हें नई पी.सी.एस. कार्य प्रणाली और तरीकों के बारे में विस्तार से प्रशिक्षित किया गया है।

फ्यूमीगेशन के कार्य में बढ़ोतरी के लिए सभी जोन के तकनीकी अधिकारियों व कर्मचारियों को एक्रीडेशन हेतु प्रशिक्षण कार्य पूरा कर लिया गया है। साथ ही ज्यादा से ज्यादा तकनीकी

कर्मचारियों को एक्रीडेशन प्रक्रिया में लाने के लिये निर्देश जारी किया गया।

(10) **नये रूप में पी.सी.एस. कार्य का प्रसार–**

पी.सी.एस. के लिए अलग से वैब पेज एवं मोबाइल एप्लीकेशन तैयार करने का कार्य किया जा रहा है।

❑

वन्दन

निर्भय नारायण गुप्ता 'निर्भय'*

चले आओ कि, जन गण मन सुनायें, साथ मिलजुल कर,
कि वंदे मातरम, इक स्वर में गायें, साथ मिलजुल कर।।

कहा था रक्त दें मुझको, मैं आजादी तुम्हें दूंगा,
वही जय हिंद का नारा, लगायें साथ मिलजुल कर।

जवानों की, किसानों की, सदा परवाह करते थे,
कि जय विज्ञान भी, इसमें मिलायें, साथ मिलजुल कर।।

कहा सारे जहां में, सबसे अच्छा है, ये हिंदोस्तां,
चलो इस देश का झंडा उठाए, साथ मिलजुल कर।।

चले आओ कि, कर लें याद, अब हम उन शहीदों को,
कि जो फाँसी पे चढ़ के मुस्करायें, साथ मिलजुल कर।।

उन्होंने खुद को करके होम, आजादी हमें सौंपी,
अब उनके नाम के दीपक जलाए, साथ मिलजुल कर।

जो सीमा पर सजग रहके, न करते जान की चिन्ता,
कि उनकी शान में, हम सर झुकाए, साथ मिलजुल कर।

ये भारत विश्व गुरू हो, और सूरज की तरह चमके,
कि कर्तव्य निर्भय सब निभायें, साथ मिलजुल कर।।

* पूर्व उप महाप्रबंधक, 5/49 विकास खण्ड गोमती नगर, लखनऊ–226010

सुबह की धूप से और शाम की बहार से

विनीत निगम*

सुबह की धूप से और शाम की बहार से
कभी गुलाब से तो कभी जूही के शबाब से
कभी गुलाबी चूनर से तो कभी कचनार से
समंदर के सैलाब से तो कभी नदी के बहाव से

रेत के घरौंदे से और परिंदों की उड़ान से
शब्दों के बाण से और हारे हुए इंसान से
इंद्रधनुष के रंगों से और घूँघट की आड़ से
जब नई पौध करवट ले, माँ के आँचल से

मृदंग की थाप से, शिव–शिव के निनाद से
बसंत की सरसों से और फाग के सतरंगों से
मधु लोलुप भृंगों से या जीवन के पराग से
ओंकार के उच्चार से या मदिरा के पान से

सूर्य की किरणों से या चाँद की धवल रश्मियों से
मंदिर के शंखनाद से और मस्जिद की अजान से
गुरुद्वारे के शब्द से और मुरली की तान से
जीवन मंगलमय हो जाए और धरा छोड़ें शान से।

* पूर्व प्रबंधक (सा.), क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

शिक्षा, धर्म और समाज

सच्चिदानंद राय*

सभ्य समाज की समुचित शिक्षा को आध्यात्मिक शिक्षा एवं परिस्थितियों पर खरे उतरने का मापदंड माना जा सकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली आधुनिक जीवन का एक आवश्यक अंग बनती जा रही है। यह कहना कि पहले के लोग गंवार होते थे, बिल्कुल ठीक नहीं लगती। पहले भी लोग शिक्षित होते थे लेकिन उस शिक्षा का महत्व लोक सेवा से बंधा होता था। हमारे धार्मिक ग्रंथों के मेल–जोल से शिक्षा में एक सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। हमें अपने बचपन की शिक्षा पद्धति का जिक्र करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि मानव मूल्यों के बिना ये आधुनिक शिक्षा अधूरी जान पड़ती है। आधुनिक तकनीकी पर आधारित यह शिक्षा आज के युग के लिए अत्यावश्यक है, साथ ही प्राचीन मूल्यों पर आधारित शिक्षा को दरकिनार कर आगे बढ़ना कहीं हमें अधूरे विकास की तरफ तो नहीं ढकेल रहा है? विचार करने की बात है।

समाज में संतोष का अभाव, जनता में तनाव, समाज में अलगाव की भावना, अंधी प्रतिस्पर्धा, विकास को खोखली करती जा रही हैं। ऐसा विकास किस काम का, जहाँ मानव मूल्यों की अवहेलना हो? मनुष्य की संवेदनशीलता उसकी अपनी शिक्षा पर निर्भर करती है। व्यक्ति का विकास व्यक्तित्व का विकास ही है। जिस शिक्षा में संवेदना का अभाव हो, वह आधुनिक होते हुए भी सामाजिक सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता।

भारत एक धार्मिक देश रहा है। यह हमारे धार्मिक ग्रंथों से उद्धृत सत्य है। जितने भी हमारे ग्रन्थ हैं, उनमें मानव मूल्यों का उल्लेख मिलता है, उदाहरण के तौर पर राजा हरिश्चंद्र के चरित्र का ही वर्णन लें। सत्य एवं अपने वचन के लिए अपने परिवार को किसी गैर के एवं स्वयं तक को काशी के घाट के रखवाले डोम राजा के हाथ बेचना, यह साबित करता है कि पहले शिक्षा की पकड़ मानव मस्तिस्क से भी अधिक गहराई तक थी। सत्य एक व्रत है। इसका पालन राजा हरिश्चंद्र ही कर सकते हैं। इसका समाज में अच्छा प्रभाव पड़ता है तथा मूल्यों पर आधारित जीवन समाज को संपुष्ट करता है। घाट के कर के रूप में अपनी धर्म पत्नी के आंचल के कपड़े को कफ़न के तौर पर ले कर ही अन्त्येष्टि क्रिया होने देना एक सत्यनिष्ठ सेवक के रूप को भी साबित करता है। इससे मूल्यों पर आधारित चरित्र की शिक्षा मिलती है। "सत्यमेव जयते" को चरितार्थ करती है। राजाओं में मानव मूल्यों का महत्व होता था, जो समाज को प्रभावित करता था। शिक्षा का समाज में संतुलन बना रहना जितना जरुरी है, समाज में विश्वास का बना रहना भी उतना ही ज़रूरी है।

शिक्षा का विकास समाज की आवश्यकता के अनुरूप एवं सह–अस्तित्व की भावना से पूर्ण होना चाहिए। आज की भागम–भाग की दौड़ में कुछ–न–कुछ पीछे छूटा जा रहा है। संवेदना, सदाचार से प्रेरित जीवन शिक्षा का सदुपयोग अधिक कर सकता है। सदाचार एवं आचरण की शिक्षा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। शिक्षित व्यक्ति अगर सदाचार से युक्त है तो समृद्ध व सुदृढ़ समाज का निर्माण कर सकता है। अशिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा, जो असंवेदनशील है, में कोई ज्यादा फर्क नहीं है। एक पढ़े–लिखे गंवार एवं एक अनपढ़ गंवार में संवेदना, सहनशीलता, सदाचार समाज के उत्थान के लिए बहुत जरूरी है। सामाजिक बुराइयाँ व कुरीतियाँ समाज को खोखला करती जा रही हैं। आधुनिक शिक्षा समाज में कोई आमूल–चूल परिवर्तन नहीं ला सकती, जब तक कि उसमें आध्यात्मिक समरसता न समाहित हो। आध्यात्मिक समरसता का सीधा मतलब संवेदना से है। संवेदनशील शिक्षित व्यक्ति ही समाज में आमूल–चूल परिवर्तन ला सकता है।

भारतीय शिक्षण व्यवस्था को आध्यात्मिक शिक्षण के साथ समाहित कर देने से मानव मूल्यों का सम्मान होने की संभावना बढ़ जाती है। ''अहिंसा परमोधर्मः'' सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था है। तकनीकी शिक्षण के साथ–साथ अन्य प्राणियों की रक्षा को भी अहमियत मिलनी चाहिए।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

आज के युग में कट्टरवादी शिक्षा बहुत तेजी से पांव फैला रही है। इसे जड़ से समाप्त करने की आवश्यकता है। शिक्षा कुछ तथाकथित शिक्षाविदों की नासमझी का शिकार होती जा रही है। जोर–जबरदस्ती से किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध दबाव डालकर उसके मानवीय स्वतंत्रता के अधिकारों का हनन नहीं करना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में धार्मिकता के सम्मिश्रण से एक भय का माहौल बन गया है। ऐसी शिक्षा का मानव जाति के उत्थान में बिल्कुल उपयोग नहीं हो सकता है। इस प्रकार की शिक्षा मानवता का गला घोंट कर बर्बरता का आतंक फ़ैलाने में लगी हुई है।

आज विश्व में जरूरत है तो सिर्फ शांति की और वह मानव के कल्याण की शिक्षा से ही हो सकती है। आधुनिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक शिक्षा का सम्मिश्रण बहुत जरुरी है जिसमें मानव मूल्यों के साथ–साथ अन्य प्राणी के हितों की रक्षा का प्रावधान हो।

भारत की आध्यामिक शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा का समायोजन विश्व कल्याण की तरफ एक साहसिक कदम होगा। मानव मूल्यों की रक्षा यदि कोई देश करता है तो वो सिर्फ भारत ही है।

महमूद ग़ज़नी जिसने भारत पर 17 बार आक्रमण किया था एवं वह उस समय के राजाओं की दया से वह बचता रहा। फिर भी कुछ मानवीय मूल्यों का मूल्यांकन नहीं कर सका और उसी समय से क्षमा, दया की शिक्षा की अवहेलना होना आरंभ हो चुका था। धीरे–धीरे मुग़लकाल का दौर आरंभ हुआ जिसमें दिनोंदिन मानवीय मूल्यों का ह्रास होता गया। मनुष्यों को गुलाम बना के रखने की प्रथा चली। शिक्षा का स्तर गिरता गया। पहला शासक बाबर था जिसने सन् 1526 में भारत पर आक्रमण कर उत्तर भारत पर अपना प्रभाव जमाए रखा। यह बात पक्की हो गयी है कि उनकी कोई शिक्षण पद्ध ति नहीं थी। जनता को जमात में लेकर, दूसरे शांत समाज को डरा कर एवं भय से उनकी धन–सम्पति लूटना एवं ऐशोआराम की जिंदगी बिताना इनका मुख्य उद्देश्य था।

इन मुग़लों के साम्राज्य का पतन, मराठा साम्राज्य के उदय के साथ आरंभ हो गया था। महाराज छत्रपति शिवाजी ने अपने शासनकाल में भारतीयता की रक्षा कीं। महाराज छत्रपति शिवाजी के शासन काल में तो मुग़लों की हवा गुम हो चली थी। उस समय भारतीय व्यवस्था छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त थी। दक्षिण का साम्राज्य भी मुग़लों से अछूता नहीं रहा। भारतीय शिक्षण व्यवस्था चरमरा गयी थी जो धीरे–धीरे ऊपर उठने लगी। इसी समय अंग्रेजों ने भी हमारी संस्कृति एवं सम्पति की खूब लूट की। अलग–अलग राजाओं में 'फूट डालो, राज करो' की नई नीति लागू कर के पुनः उन्हें ही गुलाम बनाने लगे। कहा जाता है कि अंग्रजों ने भारत का विकास किया। इससे पूरी तरह से सहमत होना ठीक नहीं है। कम से कम दो सौ साल तक इनका भी शासन रहा पर अशिक्षा व शोषण के अलावा कुछ ज्यादा भारतीयों को नहीं मिला।

हमारी कटाक्ष किसी की संस्कृति पर नहीं है लेकिन हम इतना तो जरूर कहेंगे कि जितनी भारतीय संस्कृति में संवेदनशीलता मिलती है, उतनी पाश्चात्य संस्कृति में नहीं मिलती है। भारतीय शिक्षा जीवन मूल्यों पर आधारित है। पाश्चात्य शिक्षा में मानवीय मूल्यों की पूरी तरह से रक्षा का प्रावधान भी नहीं मिलता। वर्चस्व की राजनीति में मानवीय मूल्यों के साथ–साथ प्राकृतिक मूल्यों का भी ख्याल नहीं रखा गया है। ऐसी शिक्षा से सार्वभौमिक विकास असंभव जान पड़ता है।

सदियों की गुलामी की यात्रा करके भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों को अक्षुण्ण रखे रहना एक प्रशंसनीय उपलब्धि है। यही सार्वभौमिक मान्यता का प्रतीक है। शिक्षा एक सामाजिक विकास का माध्यम होना चाहिए जिसमें सभी नागरिकों के अपने अधिकारों एवं हितों की रक्षा के साथ–साथ जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

सनातन ग्रंथों में जीवन की आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी ख्याल रखा गया है। भारतीय शिक्षा का विकास उसकी आध्यात्मिक शिक्षा के इर्द–गिर्द होना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से विश्व की शांति व्यवस्था बनी रहेगी क्योंकि यह सिर्फ भारत है जो कहता है "वसुधैव कुटुम्बकम"। सबका साथ, सबका विकास, इन सबकी नींव यही है।

शिक्षा एक व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। शिक्षित व्यक्ति की जवाबदेही समाज के प्रति बढ़ जाती है। ❑

स्वच्छता से स्वास्थ्य की ओर

रोहित उपाध्याय*

कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर ही सबसे बड़ा धन है। भले ही आप बेहिसाब सम्पत्ति कमा लें, लेकिन यदि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा तो आप उस सम्पत्ति का ठीक से उपयोग नहीं कर पाएंगे। एक बीमार धनी होने से एक स्वस्थ निर्धन होना कहीं अधिक अच्छा है। सबसे बड़ा सुख निरोगी काया।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए वातावरण का स्वच्छ होना न केवल मानव के लिए बल्कि समस्त प्राणियों के लिए आवश्यक है। स्वच्छता का अभाव कई रोगों का जनक है। प्रकृति ने तो पर्यावरण स्व्च्छ रखने के लिए और अपना सन्तुलन बनाए रखने के लिए अनेक उपाय किए थे। धरती पर यदि शाकाहारी पशु–पक्षियों को जन्म दिया तो उनका सन्तुलन बनाए रखने के लिए मांसाहारी प्राणियों की भी रचना की। यहाँ तक कि मृत प्राणियों को खाने के लिए कौए और गिद्ध जैसे पक्षियों को भी जन्म दिया। नदियों और तालाबों के जल की, उनमें रहने वाले सूक्ष्म जीवों और मछलियों द्वारा स्वयं साफ होने की व्यवस्था की। यह सब कुछ बिलकुल प्रकृति के बनाए गए नियमों के अनुसार चल रहा था, लेकिन यहीं पर प्रकृति एक सबसे बड़ी चूक कर बैठी। यह चूक थी मनुष्य जैसे बुद्धिमान प्राणी को जन्म देने की। आज तक प्रकृति अपनी इस गलती का फल भुगत रही है। जैसे–जैसे मानव नामक यह प्राणी सभ्यता के नए सोपानों पर चढ़ता गया, प्रकृति का सन्तुलन निरन्तर बिगड़ता चला गया।

महाकवि कालिदास के बारे में एक कथा प्रचलित है कि वे जिस डाल पर बैठे थे उसी को काट रहे थे। इस कथा को यदि आज के सन्दर्भ में देखें तो प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण मानव जाति आज कालिदास बन गई है, वो जिस धरती पर रहती है, उसी के पर्यावरण को नष्ट करने पर आमादा है। आज हम इतने अधिक सभ्य और बुद्धिमान हो चुके हैं कि हमने जल, थल और नभ शायद ही कोई ऐसी जगह छोड़ी हो जिसे अपनी गतिविधियों से प्रदूषित न कर दिया

हो। नदियों के तट हों, महासागरों की गहराइयाँ हों, पर्वतों की ऊँची चोटियाँ हों या अन्तरिक्ष की ऊँचाइयाँ हों आज हमने अपना कचरा सब स्थानों पर पहुँचा दिया है।

यदि सम्पूर्ण विश्व की बात की जाए तो इस विषय पर सैंकड़ों पन्ने रंगे जा सकते हैं। आज न केवल गरीब बल्कि विकसित देश भी इस कचरे की समस्या से जूझ रहे हैं। बढ़ते औद्योगिकीकरण से प्लास्टिक, पोलीथिन तथा ई–वेस्ट जैसे नष्ट न होने वाले कचरे ने सम्पूर्ण विश्व को चिन्ता में डाल रखा है। यह विषय इतना संवदेनशील और विस्तृत है कि यदि हम इसे वर्तमान में केवल अपने देश भारत तक ही सीमित रखें तो बेहतर होगा।

आज हमारे देश का नाम विश्व के सबसे गन्दगीपूर्ण देशों में शुमार है। यह एक अलग बात है कि सिन्धु घाटी, हड़प्पा और मोहन जोदड़ो जैसी प्राचीन सभ्यताओं का जन्म यहीं पर हुआ। दुनिया को वेदों तथा शून्य यानि जीरो का ज्ञान देने वाला और तक्षशिला एवं नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों का देश और विदेशियों को अपनी विविधता एवं संस्कृति की ओर आकर्षित करने वाला हमारा भारत देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था, जो स्थिति अब देखने को नहीं मिलती।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

इसे एक विडम्बना ही कहना चाहिए कि जिस भारत देश को हम भारत माता के नाम से सम्बोधित करते हैं और गर्व महसूस करते हैं उसी भारत माता को स्वच्छ रखने के लिए हमें स्वच्छ भारत जैसे अभियान चलाने पड़ रहे हैं। जहाँ माँ स्वच्छ और स्वस्थ नहीं रहेगी तो बच्चे भी कभी स्वस्थ नहीं रह सकते। यह वाकई एक शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थिति है।

हम भारतवासियों के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम केवल अपने घर के अन्दर की सफाई पर ध्यान देते हैं। बाहर की सफाई की जिम्मेदारी तो सरकार की है। खुले में शौच करने, कचरा फेंकने से यदि अन्य लोग प्रभावित होते हैं तो क्या फर्क पड़ता है। बीमारी फैलेगी तो सरकार है न, लोगों को स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाने के लिए।

गन्दगी फैलाने का जिम्मेदार अक्सर हम झोपड़–पट्टियों में रहने वाले गरीब लोगों को ही मानते हैं क्योंकि हमें इनके घर और वस्त्र साफ नजर नहीं आते। क्या हम सब गन्दगी फैलाने में बराबर के भागीदार नहीं हैं? आप किसी भी पर्यटन स्थल पर चले जाइए आपको प्लास्टिक की बोतलें, चिप्स और चॉकलेट के रैपर तथा अन्य प्रकार की गन्दगी फैलाते पर्यटक दिखायी दे जाएंगे। भारतीय रेल तो हमारी निजी सम्पत्ति है, हम जहाँ बैठते हैं, वहाँ सीट के नीचे ही मूँगफली के छिलके और फलों के छिलके फैलाने में हमें कोई संकोच नहीं होता। लम्बी दूरी की ट्रेन में तो कई बार आप शौचालय का दरवाजा भी नहीं खोल पाते क्योंकि उसमें पहले से ही गंदगी रहती है। मुम्बई लोकल के दरवाजों और खिड़कियों पर पड़ी पान की पीक के धब्बे अपनी एक अलग कहानी बयाँ करते हैं।

क्या वाकई हम एक सभ्य देश के सभ्य नागरिक हैं? हमें अपने अधिकार तो मालूम हैं लेकिन कर्तव्य तो दूसरों के लिए हैं। हाँगकाँग, सिंगापुर या शंघाई की सफाई व्यवस्था और अपने देश के हालात की तुलना पर हम लोग घण्टों व्याख्यान दे सकते हैं, लेकिन खुले में कचरा फैलाने, नदियों और तालाबों को गन्दा करने में हम ही सबसे आगे रहते हैं। भारत माता कहने वालों को क्या इस पर विचार नहीं करना चाहिए? क्या यही हमारी माँ की इज्जत है?

एक हिन्दी फिल्म को रिलीज होने से रोकने के लिए सड़कों पर इतना हंगामा खड़ा कर दिया जाता है कि न्यायालय को अपना दखल देना पड़ता है। एक बाबा के समर्थक उसे गिरफ्तार करने पर पूरे राज्य को बंधक बना लेते हैं। यह सब देखकर लगता है कि इस तरह की उग्रता हम गन्दगी फैलाने वालों के विरुद्ध क्यों नहीं दिखाते? क्यों नहीं हम समय पर कचरा न उठाने वाले नगर निगमों और नगर पालिकाओं पर धरना प्रदर्शन करते?

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार दुनिया में सबसे अधिक बीमारियाँ दूषित जल के कारण होती हैं। एक अनुमान के अनुसार विकासशील देशों में होने वाली 80 प्रतिशत बीमारियों और एक तिहाई मौतों के लिए प्रदूषित जल का सेवन ही जिम्मेदार है। शहरों में तो लोग वॉटर प्यूरीफायर लगाकर पानी को साफ कर लेते हैं, लेकिन गांवों में तालाब या हैंडपम्प का पानी उपयोग करने वाले लोग इतने भाग्यशाली नहीं होते।

खुले में शौच जल की गुणवत्ता को सबसे अधिक प्रभावित करता है। ई–कोलाई नामक बैक्टीरिया मानव मल की उपस्थिति का सूचक होता है। मानव मल में मौजूद जीवाणु हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त घातक होते हैं। इन सब बीमारियों से मुक्ति केवल मानव मल के उचित निपटान के द्वारा ही पायी जा सकती है।

महात्मा गांधी का एक मशहूर कथन है– 'स्वच्छता, राजनीतिक स्वतन्त्रता से अधिक महत्वपूर्ण है।' इससे प्रभावित होकर माननीय प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहा था कि हमें गन्दगी और खुले में शौच के खिलाफ लड़ाई लड़नी है, हमें पुरानी आदतों को बदलना है और महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के वर्ष 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करना है। गांधी जी स्वयं मलिन बस्तियों मे जाकर सफाई करते थे और दूसरों को भी प्रेरित करते थे।

पहले भी इससे मिलते–जुलते अनेक कार्यक्रम जैसे 'निर्मल भारत' और 'टोटल सैनिटेशन कैंपेन' जैसे अनेक कार्यक्रम विभिन्न सरकारों द्वारा चलाए गए हैं, लेकिन हर सरकारी कार्यक्रम की तरह वे केवल आँकड़ों और कागजों में ही उलझ कर रह गए। अधिकांश सरकारी कार्यक्रमों का यही हश्र होता है कि वे आम जनता तक

नहीं पहुँच पाते और असली लाभार्थी तक पहुँचने से पहले ही दम तोड़ देते हैं।

'एक कदम स्वच्छता की ओर' के नारे को महात्मा गांधी के चश्मे से देखने का वर्तमान भारत सरकार का 'स्वच्छ भारत मिशन' एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी अभियान है। इस परियोजना की लागत 1,96,009 करोड़ रुपए है। परियोजना का लक्ष्य है भारत को 5 वर्ष में गन्दगी से मुक्त देश बनाना। ग्रामीण और शहरी इलाकों में सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाना और पानी की आपूर्ति करना। सड़कें, फुटपाथ और बस्तियाँ साफ रखना और अपशिष्ट जल को स्वच्छ करना। 2 अक्तूबर, 2014 को आरम्भ यह परियोजना 2 अक्तूबर, 2019 को समाप्त होगी। इस परियोजना को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी शहरी विकास मंत्रालय, राज्य सरकारों, गैर सरकारी संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, निकायों को दी गई है।

वर्तमान सरकार ने एक सपना देखा है जो सीधा–सीधा आम जनता के स्वास्थ्य से जुड़ा है। डेंगू या मलेरिया का मच्छर या हैजा फैलाने वाली मक्खी अमीर–गरीब में भेदभाव नहीं करती। यदि गांव का गरीब आदमी हैजे का शिकार होकर बिना इलाज के दम तोड़ देता है तो शहर के रईस आदमी को नामी–गिरामी अस्पताल भी डेंगू से मरने से नहीं बचा पाते।

स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य लक्ष्य है खुले में शौच से मुक्त भारत का निर्माण। इसे धीरे–धीरे चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है। पहले गांव, फिर तहसील/तालुका, जिला और फिर राज्य को ओ.डी.एफ. यानि खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जा रहा है। सिक्किम भारत का पहला और हिमाचल प्रदेश दूसरा ओ.डी.एफ. राज्य बन गए हैं। इसी तरह धीरे–धीरे हर राज्य को ओ.डी.एफ. बनाए जाने का लक्ष्य है। कार्यक्रम का मुख्य फोकस लोगों की सोच बदलना है। प्रसिद्ध अभिनेत्री विद्या बालन द्वारा किया गया विज्ञापन ''जहाँ सोच, वहाँ शौचालय'' इसी सोच को प्रतिबिंबित करता है। हिन्दी फिल्मों के महानायक अमिताभ बच्चन, जो इस अभियान के ब्रांड एंबेसेडर भी हैं, विज्ञापन फिल्मों द्वारा स्वच्छता की अलख जगा रहे हैं। स्वच्छ भारत मिशन पर आधारित फिल्म 'टॉयलेट' – एक प्रेम कथा' भी बॉक्स ऑफिस पर अपने झण्डे गाड़ने में कामयाब रही है।

खुले में शौच को रोकना वाकई में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। क्या आप जानते हैं एक ग्राम मल में 1,00,00,000 वायरस, 10,00,000 बैक्टीरिया, 1,000 परजीवी अंडाणु और 100 परजीवी अंडे होते हैं? खुले में शौच करने वालों में से 60 प्रतिशत आबादी केवल भारत में ही रहती है। एक अनुमान के अनुसार खुले में शौच से फैलने वाली सबसे गम्भीर बीमारी डायरिया के कारण भारत में हर घण्टे 5 वर्ष से कम उम्र के कम–से–कम 13 बच्चे अपनी जान गवां देते हैं। बच्चों के पेट में कृमि छोटी आंत को नुकसान पहुँचाते हैं और वृद्धि तथा विकास के लिए आवश्यक तत्वों को अवशोधित करने की क्षमता रुक जाती है। बच्चों में सामान्य कद में कमी अर्थात् 'स्टंटिंग' के लिए खुले में शौच को मुख्य रूप से जिम्मेदार माना गया है।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अपर्याप्त साफ–सफाई के कारण प्रति वर्ष 5,400 करोड़ डॉलर की हानि होती है। गांवों में शौचालय की व्यवस्था न होने से सबसे अधिक तकलीफ महिलाओं को होती है। उन्हें शौच या लघुशंका के लिए अन्धेरे का इन्तजार करना पड़ता है। जबर्दस्ती शौच या पेशाब को रोकना भी अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को जन्म देता है। इन महिलाओं के अन्धेरे के इन्तजार को दूर करने के लिए गांव में शौचालय का होना अत्यन्त आवश्यक है। खुले में शौच का चलन बन्द होने से रोगों का संक्रमण कम होता है और लोग अपना बहुमूल्य समय और पैसा, जो उन्हें इलाज पर खर्च करना पड़ता, बचाने में सफल होते हैं। बरसात के दिनों में खुले में शौच करने वाले लोगों को सांप–बिच्छू जैसे विषैले जीवों का शिकार बनने का डर भी बना रहता है।

स्वच्छता पर शोध करने वाली एक जानी–मानी संस्था 'राइस' के अनुसार 5 राज्यों (बिहार, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश) में 44 प्रतिशत घरों में शौचालय होने के बावजूद कम–से–कम एक व्यक्ति खुले में शौच करने जाता है। इसके अलावा आंध्र प्रदेश के पंचायती राज और ग्रामीण विकास विभाग के निर्मल भारत अभियान की ऑडिट रिपोर्ट में पाया है कि 15 साल से चल रहे इस कार्यक्रम के बावजूद खुले में शौच करने की आदत समाप्त नहीं हो पायी है।

सरकार भी मानती है कि उत्तम और बेहतर स्वास्थ्य का रास्ता स्वच्छता से ही जाता है। अतः वह सिर्फ एक स्वच्छ भारत अभियान चलाकर ही सन्तुष्ट नहीं हो गई है। 21 दिसम्बर, 2016 को भारत सरकार ने स्वच्छता सुधार जागरूकता बढ़ाने एवं स्वास्थ्यप्रद जीवनचर्या के जरिए बेहतर स्वास्थ्य हासिल करने के लिए 'स्वच्छ स्वस्थ सर्वत्र' कार्यक्रम की शुरुआत की है। इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वस्थ बच्चे, स्वस्थ भारत' कार्यक्रम भी शुरू किया गया। सरकार निश्चित तौर पर यह मानती है कि शिक्षित विद्यार्थी स्वच्छता के सबसे बड़े सन्देशवाहक हैं। स्कूल में स्वच्छता पर अधिक जोर दिया गया है। सैंकड़ों लड़कियाँ किशोरावस्था के बाद स्कूल में शौचालय न होने के कारण आगे की पढ़ाई छोड़ देती हैं।

गरीबी कुपोषण को जन्म देती है और कुपोषण का शिकार बच्चे ही सबसे पहले जल एवं खाद्य पदार्थों में होने वाले संक्रमण की चपेट में आते हैं। गांवों में आंगनवाड़ियाँ तो खोल दी गई हैं, लेकिन वहाँ साफ–सफाई के इन्तज़ाम सही नहीं हैं। आंगनवाड़ियों में शौचालय गन्दे होने के साथ–साथ पानी भी नहीं होता है। स्कूलों में भी साबुन नहीं होता और न ही बच्चों को साबुन से हाथ धोने के लाभ बताए जाते हैं, जिससे संक्रमण का चक्र बना रहता है। इनके सुधार के लिए भी केन्द्रीय महिला एवं बाल कल्याण मंत्रालय द्वारा 'बाल स्वच्छता मिशन' चलाया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य है– स्वच्छ आंगनवाड़ी, स्वच्छ वातावरण (मैदान), निजी स्वच्छता, साफ आहार, साफ पानी तथा साफ शौचालय।

कई अध्ययन और शोध यह बताते हैं कि केवल स्वच्छ पानी पीने और साबुन से हाथ धोने की आदत डाल लेने से ही जीवाणुओं के प्रसार को काफी हद तक रोका जा सकता है।

जल संसाधन मंत्रालय ने 'नमामि गंगे' कार्यक्रम वर्ष 2014 में प्रारम्भ किया, जिसका लक्ष्य गंगा तट पर बो गांवों को ओ.डी.एफ. यानि खुले में शौच से मुक्त बनाना है। 20,000 करोड़ रुपए का प्रावधान इसके लिए बजट में अलग–से किया गया है। भारत में गंगा एक आम नदी नहीं है। यह करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक है। 2,525 कि.मी. लम्बी गंगा नदी उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल से होते हुए बंगाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है। अपनी सहायक नदियों के साथ मिलकर यह भारत के 11 प्रदेशों तथा देश की 40 प्रतिशत आबादी को जल की आपूर्ति करती है। आज गंगा इस कदर मैली हो चुकी है कि वर्ष 2017 में राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एन. जी.टी.) ने पाया कि पिछले 15 वर्षों में 900 करोड़ रुपए खर्च करने के बावजूद स्थिति जस–की–तस है। सीवेज और औद्योगिक कचरे के अलावा लोग गंगा में अस्थियाँ भी प्रवाहित करते हैं। इन सबके कारण गंगा का अपना एक जो पारिस्थितिकी तन्त्र था वह समाप्त हो चुका है। अब गंगा में स्नान करने से पाप मुक्त होने के बजाय व्यक्ति रोग युक्त हो जाता है। सर्वोच्च न्यायालय तो हाल में अपनी एक टिप्पणी में कह चुका है कि केवल बजट बढ़ाने से ही काम नहीं चलेगा। यदि गंगा की सफाई के लिए शीघ्र ही ठोस कदम नहीं उठाए जाते तो वह अगले 200 वर्ष तक भी साफ नहीं हो पाएगी।

जो हाल गंगा नदी का है, वही हाल देश में तकरीबन हर नदी का है। हर शहर या महानगर का सीवेज या कचरा नदी में बहा दिया जाता है। यदि आप किसी भी बड़े शहर के पास से गुजरने वाली नदी को देखेंगे तो वह एक गन्दे पानी का नाला दिखाई देती है। इसी पानी का प्रयोग पीने के लिए और कपड़े धोने के लिए भी किया जाता है। इसके अलावा प्रतिमा विसर्जन से भी नदियों का जल विषाक्त होता है। यह जल न केवल मानव स्वास्थ्य बल्कि पशु–पक्षियों और जलीय जीवों के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होता है।

हमारे महानगर भी केवल वी.आई.पी. इलाकों को छोड़कर कहीं से भी स्वच्छ नजर नहीं आते। महानगरों में सूखे और गीले कचरे का अलग निपटान करने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। पानी की सही निकासी न होने

के कारण आज भी दिल्ली और मुम्बई जैसे महानगरों की सड़कें बरसात में नाले में तबदील हो जाती हैं। सही मायने में कहा जाए तो महानगरों में कचरे का निपटान एक बड़ी समस्या के रूप में उभरा है। भराव क्षेत्र जहाँ पर कूड़ा डाला जाता है, धीरे–धीरे कूड़े के पहाड़ के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं। शहर फैलते जाने से ये भराव क्षेत्र जो कभी शहर के बाहर होते थे अब लगभग शहर के मध्य में आ गए हैं। इस कचरे से विभिन्न प्रकार की हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है जिससे आस–पास के क्षेत्र में रहने वाले निवासियों को न केवल दुर्गंध का सामना करना पड़ता है बल्कि उनका स्वास्थ्य भी खराब रहता है। इनके ऊपर मंडराते चील–कौए भी हवाई दुर्घटनाओं को आमंत्रित करते नजर आते हैं।

यदि महानगरों में सीवेज का और कचरे का सही तरीके से निपटान किया जाए तो कम्पोस्ट और खाद बनाकर मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाया जा सकता है। उससे न केवल स्वास्थ्य और पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ताएं दूर की जा सकती हैं, बल्कि आर्थिक लाभ भी कमाया जा सकता है।

गुजरात के कई शहरों में मानकीकृत सीवेज संयंत्र लगाए गए हैं। यहाँ सीवेज को रोगाणुमुक्त कर जैव उर्वरक बनाए जा रहे हैं। यह प्रयोग अत्यन्त सफल रहा है और उसे देश के अन्य भागों में भी लागू किया जा सकता है। इससे न केवल हमारा देश स्वच्छ होगा बल्कि लोगों का स्वास्थ्य और जीवन भी बेहतर होगा।

यह तो थी बात सीवेज के सही तरीके से निपटान की क्योंकि महानगरों और शहरों में प्रतिदिन 3325.40 करोड़ लीटर गन्दा जल (सीवेज) प्रवाहित होता है। शहरी क्षेत्रों में भी लोग खुले में शौच करते नजर आते हैं। रेलवे लाइन के किनारे बनी झोपड़पट्टियों में रहने वाले लोग अपनी जान हथेली पर रखकर अपना नित्य कर्म रेलवे लाइन के किनारे ही करते हैं। इन्हें न तो अपनी जान की चिन्ता रहती है और न ही खुले में शौच से होने वाली बीमारियों की। खैर जिस देश में लोग हैल्मेट भी अपनी सुरक्षा के लिए नहीं बल्कि पुलिस के डर से लगाते हों, वहाँ यह एक बहुत मामूली बात है।

खुले में शौच को केवल लोगों की आदत में बदलाव के द्वारा ही रोका जा सकता है। लोगों की, खासकर इसी सोच को बदलने के लिए 30 मई, 2017 को केन्द्रीय पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रालय द्वारा शौचालय के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 'दरवाजा बन्द' नामक नए आक्रामक अभियान का शुभारम्भ किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य उन लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है जो शौचालय होने के बावजूद उसका प्रयोग नहीं करते। यह अभियान लोगों को बताता है 'दरवाजा बन्द तो बीमारी बन्द'। प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन और अभिनेत्री अनुष्का शर्मा इस अभियान का प्रचार कर रहे हैं।

स्वच्छ भारत मिशन अपने अन्तिम चरण में है और लक्ष्य प्राप्ति के लिए कुछ ही महीने शेष हैं। सरकार इस कार्यक्रम को सफल बनाने और अपने लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए कोई कोर कसर बाकी नहीं रखना चाहती है। कहते हैं कि 'एक व्यक्ति छूटा, तो सुरक्षा चक्र टूटा'। अमिताभ बच्चन भी मानते हैं कि बच्चों की सहायता से इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। किसी वयस्क की तुलना में बच्चों का व्यवहार परिवर्तन करना अधिक आसान है और यही बच्चे कल के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे और इस सुरक्षा चक्र को टूटने नहीं देंगे। अपने एक प्रसिद्ध विज्ञापन में तो अमिताभ जी कहते भी हैं 'भैया, इस बच्चन की नहीं तो इन बच्चन की तो सुनिए'।

विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत निश्चित तौर पर स्वच्छ और स्वस्थ उसी दिन बन पाएगा जब हर व्यक्ति शौचालय का प्रयोग करेगा, सड़कों पर गन्दगी नहीं फैलाएगा और अपनी व्यक्तिगत सफाई के साथ–साथ दूसरों को भी स्वच्छ आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करेगा। यह लक्ष्य मुश्किल जरूर है, परन्तु असम्भव नहीं। अभी तो यह सपना लगता है, पर सपना तभी पूरा होता है जब आप उसे पूरा करने की ठान लें। जिस दिन आपको अपनी रेल यात्रा के दौरान पटरी के किनारे शौच के लिए बैठा कोई व्यक्ति न दिखाई दे, रेलवे स्टेशन के आस–पास कूड़े–करकट का ढेर न दिखाई दे, शहर की नदी और तालाब का पानी साफ दिखने लगे उसी दिन सोचिए बापू का स्वराज से पहले स्वच्छता का स्वप्न साकार हो गया।

सबसे पहले आप स्वयं की सोच में बदलाव लाइए। प्रतिज्ञा कीजिए कि न गन्दगी करूँगा, न करने दूँगा। स्वच्छ भारत की दिशा में बढ़ाया गया हमारा एक कदम हमारे दूसरे कदम को निश्चित तौर पर स्वस्थ भारत की ओर ले जाएगा। ❑

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय–एक परिचय

इस पत्रिका के पाठकों को क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्यविधि एवं इनके अधीन वेअरहाउसों तथा अन्य कार्यकलापों की जानकारी देने के लिए संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाता है। पिछले अंकों में हमने अपने अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों का संक्षिप्त परिचय दिया था। इस अंक में जानिये हमारे क्षेत्रीय कार्यालय– मुंबई के बारे में।

क्षेत्रीय कार्यालय–मुंबई

केन्द्रीय भण्डारण निगम का यह क्षेत्रीय कार्यालय महाराष्ट्र के नवी मुम्बई महानगर के तुर्भे, वाशी क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना वर्ष 1966 में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत कुल 35,000 मी.टन क्षमता के न्यू परेल, बोरीवली और जे शेड इन तीन केन्द्रों की स्थापना के साथ हुई, जो धीरे–धीरे बढ़ती गई। वस्तु एवं सेवा कर के चलते जुलाई, 2017 में क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई में क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई के विलय किए जाने पर क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई की अपनी और नवी मुम्बई दोनों की मिलाकर वर्तमान में कुल क्षमता 13,53,658 मी.टन है। इसके अधीन महाराष्ट्र और गोवा राज्य में 4 कंटेनर फ्रेट स्टेशन, 4 इनलैंड कंटेनर डिपो, 1 इंटीग्रेटेड रेल टर्मिनल, 1 एअर कार्गो कॉम्प्लेक्स और 27 वेअरहाउस हैं। कंटेनर फ्रेट स्टेशन, डिस्ट्रीपार्क में भारत का एकमात्र रिलोकेटेबल कंटेनर स्कैनर संस्थापित है, जिसमें जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास से आयात होने वाले कंटेनरों की स्कैनिंग की जाती है।

किसान विस्तार सेवा योजना

किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खाद्यान्न का भण्डारण करना सिखाने, सार्वजनिक भाण्डागारों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करने तथा भण्डारण रसीद बैंक में बंधक रखकर ऋण प्राप्त करने में सहायता करने के उद्देश्य से निगम द्वारा 1978–79 में लागू किसान विस्तार सेवा योजना का अनुपालन करते हुए इस कार्यालय में यह योजना चलायी जा रही है। इस योजना के माध्यम से इस कार्यालय द्वारा चलाए गए अभियान से अब तक सैंकड़ों किसानों को जागरूक कर लाभान्वित किया जा चुका है।

प्रदर्शनी

वैश्वीकरण एवं व्यापार के क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई एवं अधीनस्थ केन्द्रों द्वारा व्यापार एवं कृषि क्षेत्र में लगायी जाने वाली विभिन्न

प्रदर्शनियों में बड़े उत्साह से भाग लिया जाता है। हाल ही में कृषिथान इंटरनेशनल एग्रीकल्चर ट्रेड फेयर एंड कॉन्फ्रेंस द्वारा नासिक में 22 से 26 नवम्बर, 2018 तक लगायी गई कृषि सम्बन्धी प्रदर्शनी में नासिक स्थित हमारे सैन्ट्रल वेअरहाउस, नासिक रोड द्वारा इस प्रदर्शनी में भाग लिया गया। इस प्रदर्शनी में निगम को Best educational & SOS Award तक भी प्राप्त हुआ।

कीट नियन्त्रण सेवाएं

क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई मुख्य रूप से एअर इंडिया, इंडियन एअरलाइन्स, शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया, भारतीय जीवन बीमा निगम, आंध्राबैंक, देना बैंक, केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे बड़े व प्रतिष्ठित संस्थानों/कार्यालयों को कीट नियन्त्रण सेवाएं मुहैया कर रहा है।

डब्ल्यू.डी.आर.ए. प्रणाली

क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई के कुल 7 वेअरहाउसों को डब्ल्यू.डी.आर.ए. के तहत पंजीकृत किया गया है। ये वेअरहाउस परक्राम्य भाण्डागार रसीद जारी करने के लिए अधिकृत हैं। इन रसीदों पर किसान/जमाकर्ता बैंकों से ऋण ले सकते हैं।

श्रम शक्ति

मुम्बई क्षेत्र एवं वेअरहाउसों को सक्षमता से चलाने एवं उसे प्रगति के पथ पर ले जाने में श्रम शक्ति का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

राजभाषा के क्षेत्र में गतिविधियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई संघ की राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए कृत संकल्प है। कार्यालय के 80 प्रतिशत से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त होने के चलते क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई को राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अधीन 1988 में अधिसूचित किया गया है। इसके अलावा, इसके अधीनस्थ 15 केन्द्र भी इस नियम के अन्तर्गत अधिसूचित हैं। राजभाषा अनुभाग के अलावा कुल छह अनुभागों में से चार अनुभागों को अपना शत–प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की सुविधा, कार्यकुशलता एवं हिन्दी ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यालय द्वारा अपने स्टाफ को यथानुरूप शब्दावलियाँ वितरित करने के साथ हिन्दी पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। हर तिमाही में हिन्दी व्याकरण, हिन्दी अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, सूचना प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर आदि अनेकानेक विषयों पर हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं और हिन्दी में काम करने में आने वाली समस्याओं का निवारण किया जाता है। हिन्दी में काम करने के लिए विनिर्दिष्ट अनुभागों द्वारा अपना शत–प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने एवं अन्य अनुभागों द्वारा अपने अनुभाग का कुछ विशिष्ट कार्य हिन्दी में करने के कारण कार्यालय के हिन्दी काम में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। कार्यालय के हिन्दी माहौल के चलते कार्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के अलावा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा निगमित कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़–चढ़कर भाग लिया जाता है। कार्यालय में मनाया जाने वाला हर दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा हिन्दी में ही मनाया जाता है। कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी एवं यहाँ से सेवानिवृत्त कार्मिक भी, लेखन कार्य में रुचि लेते हैं और निगम, मंत्रालय, अन्य कार्यालय, नगर राजभाषा कार्यान्वन समिति द्वारा प्रकाशित विभिन्न हिन्दी गृह पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएं भेज कर राजभाषा के प्रचार–प्रसार–विकास में अपना पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

विशेष उपलब्धियाँ

हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के परिणामस्वरूप निगम द्वारा प्रतिवर्ष इस कार्यालय को राजभाषा शील्ड से नवाजा जा रहा है। गृह मंत्रालय के क्षेत्रीय राजभाषा विभाग एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने भी इस क्षेत्र के राजभाषा के कार्य–निष्पादन को देखते हुए राजभाषा शील्ड प्रदान की है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के समन्वय से विभिन्न कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को भी समय–समय पर सम्मानित किया जाता रहा है। निगम के तकनीकी प्रभाग द्वारा खाद्य दिवस पर प्रति वर्ष आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में भी इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को कई वर्षों तक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। कार्यालय की टैग लाइन 'जन–जन के लिए भण्डारण' हमारे कार्यालय के एक अधिकारी की ही देन है।

प्रगति की दिशा में उठते कदम

कंटेनर फ्रेट स्टेशन, कालम्बोली में एक नई कार रैक हैंडलिंग व्यवस्था प्रगति पथ पर है। भारतीय खाद्य निगम का दैनिक लेन–देन अद्यतन रखने के लिए डिपो ऑनलाइन सिस्टम को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया है। 2 केन्द्रों में गोदाम प्रबन्धन प्रणाली की शुरुआत की जा चुकी है। अन्य विभिन्न केन्द्रों में भी उपयोगकर्ताओं को एकल खिड़की प्रणाली के प्रावधान के प्रयास जारी हैं। वाशी, गोंदिया और अकोला के नवीनीकरण से इनकी क्षमता के इष्टतम उपयोग में मदद मिली है। कपास की अच्छी फसल की आशा के चलते निगम और भारतीय कपास निगम के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। एटीएम/मोबाइल टॉवरों की संस्थापना के लिए पेशकश की जा रही है। इसके अलावा भी इसमें कई और नए आयाम जुड़ने की पूरी तैयारी है, जिनकी स्पष्ट झलक निकट भविष्य में दिखाई देगी और निश्चित ही मील का पत्थर साबित होगी। ❑

बेटियों का समाज में स्थान एवं योगदान

रामसेवक मौर्य*

इतिहास के पन्नों पर अगर नज़र डाली जाए तो भारत एक विशालकाय भूखंड था जिसमें अनेकों भाषाएं, धर्म, जाति, समुदाय के लोग रहते थे और एक से एक शक्तिशाली एवं गुणवान, विचारक व विद्वान इस भारत की धरती पर पैदा हुए। जब बेटियां एक उम्र के बाद किसी की बहन, पत्नी, माता इत्यादि के रूप में होती हैं, तब उनकी कोख से जन्म लेने के बाद ही इन लोगों से यह विशालकाय भूखण्ड बना किन्तु दुर्भाग्य रहा नारी जाति का कि मनुष्य ने जन्म लेने के बाद भी इन्हें पूर्ण सम्मान और पढ़ने–लिखने की आजादी, बोलने की आजादी इत्यादि प्राप्त नहीं होने दी। इतना ही नहीं उनको पर्दे और घूंघट के अन्दर रहने को विवश किया गया जिसके कारण वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन, समाज एवं देश हित में नहीं कर पाईं और परिणाम ये हुआ कि हमारा देश सदियों तक गुलाम व्यवस्था के रूप में स्थापित हुआ। उसके बावजूद भी भारतीय नारी/बेटी को उचित स्थान देने से समाज नकारता रहा।

उसके बाद सर्वप्रथम महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा ये विचार मंथन किया गया कि नारी को जब तक शिक्षित नहीं किया जाएगा, समाज का उत्थान संभव नहीं है, और सर्वप्रथम उन्होंने इस कुप्रथा को अपने घर से ही समाप्त करने का निर्णय लिया और अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षित किया (जिनका जन्म 3 जनवरी, 1831 को पुणे के नै गाँव में हुआ था) और उनको देश की प्रथम महिला शिक्षिका के रूप में समाज में स्थापित किया गया। धीरे–धीरे समय बदलता गया, देश आजाद हुआ। डॉ. भीमराव अम्बेडकर महात्मा ज्योतिबा फुले को अपना सामजिक गुरु मानते थे इसलिए उनके ग्रंथों का अध्ययन करने के बाद नारी जाति को समाज में उच्च स्थान दिलाने के विचार भी उनके जहन में उत्पन्न हुए और उन्हें अपनी प्रेरणा मानते हुए वह आजाद भारत के क़ानून मंत्री बनने के बाद सर्वप्रथम नारी उत्थान के लिए, हिन्दू कोड बिल संसद में लेकर आए। बेटियों को पिता की सम्पत्ति में समुचित भागीदारी, शिक्षा के क्षेत्र में भागीदारी और बाल–विवाह,

विधवा–विवाह और सतीप्रथा पर विशेष कानून बनाने का प्रावधान हिन्दू कोड बिल में किया गया था किन्तु देश के कट्टरपंथियों ने उस बिल का कड़ा विरोध किया और उस बिल को संसद में पास होने से रोक दिया गया जो बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के लिए एक आघात के रूप में, उनके दिल को झिंझोड़ रहा था। जिसके चलते उन्होंने यह कहकर अपने पद से इस्तीफा दे दिया कि समाज का कोई भी अंग अशिक्षित रहता है या दबा रहता है तो समाज के विकास की कल्पना करना अपने–आप में बेईमानी होगी किन्तु सरकार भी बाबा साहब के विचारों के सामने नतमस्तक थी जिसके चलते हिन्दू कोड बिल को तीन हिस्सों में बाँट कर संसद में कानून बनाया गया।

किन्तु कानून बनाने से देश में बेटियों को आगे बढ़ाना संभव नहीं हो पा रहा था इसीलिए कुछ समाज सेवी संगठन देश में सक्रिय हुए और संवैधानिक व्यवस्था के तहत आन्दोलन चलाते हुए वह बेटी और नारी जाति के विकास के लिए अग्रसर हुए और सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए कार्यक्रम जोरों पर चलाया गया। फिर भी इस समाज ने बेटियों और नारी जाति के उत्थान को समुचित रूप से स्वीकारा नहीं क्योंकि 1901 के जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर 1000 प्रति पुरुषों की तुलना में 972 महिलायें थीं और 1991 तक यह संख्या घटकर 1000 पुरुषों के समक्ष 927 महिला का अनुपात निकल के आया और 1991 से 2011 के बीच बेटियों की संख्या में कुछ वृद्धि दर्ज

* प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

की गई तथा वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार पुरुषों पर 940 महिलाओं का अनुपात निकलकर आया क्योंकि भारत सरकार ने भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाने के लिए एक विशेष कानून पास किया, कानून बनने के बाद भी नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2013 में भ्रूण हत्या के 217 मामले दर्ज हुए जिसमें मध्य प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा अग्रणीय थे।

इसके साथ–साथ हरियाणा में लिंग अनुपात 775 पाया गया। सरकार को इस विषय पर चिंता हुई तथा हरियाणा सरकार को इस बात के लिए विवश होना पड़ा कि हमें लिंग अनुपात को किसी न किसी रूप से बढ़ाना पड़ेगा, इसी कड़ी में हरियाणा राज्य के जींद के बीबीपुर गाँव के सरपंच श्री सूरज जागलान ने अपने क्षेत्र में लिंग अनुपात को बढ़ाने के लिए लड़कियों को शिक्षित करने और उन्हें विकसित करने तथा समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए– ''बेटी बचाओ–सेल्फी बनाओ'' प्रतियोगिता नामक सामाजिक आंदोलन चलाया, जिसमें उन्हें भरपूर सफलता प्राप्त हुई और उसी से प्रेरणा लेकर हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत से देश को ''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ'' अभियान चलाने का नारा दिया, और उन्होंने देश में दहेज़ प्रथा, भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों को रोककर बेटियों को पढ़ाने एवं उन्हें मुख्य धारा में लाने के लिए जनता से आह्वान किया। बेटी पढ़ेगी और पढ़–लिखकर समझदार बनेगी तभी तो वह समाज के उत्थान में अपना योगदान देकर अपना स्थान सुनिश्चित कर पाएगी क्योंकि बेटी समाज के दो परिवारों को मुख्य धारा में लाने के लिए सहयोग प्रदान कर सकती है। सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल और पी.टी. उषा, बहन मायावती इत्यादि बेटियों को उनके परिवार पढ़ा–लिखाकर आगे लाए थे तभी तो वे देश का मार्गदर्शन कर सकीं थीं।

वर्तमान में हमारी सरकार ने बेटियों को आगे लाने के लिए सुकन्या समृद्धि खाता खोलने की भी पहल की है। इससे पहले धन लक्ष्मी योजना सरकार ने शुरू की थी। इसके बावजूद भी भारतीय समाज नारी को उचित स्थान नहीं दे पा रहा है और समाज में रोज नए जघन्य अपराध महिलाओं पर हो रहे हैं। इसलिए अगर इस बुराई को हमें ख़त्म करना है तो कानून बनाने के साथ–साथ हमें बेटियों को अधिक से अधिक पढ़ाने और बेटे के बराबर समाज में उन्हें सम्मान देने तथा समाज की मुख्य धारा में उन्हें जोड़ने के लिए हमें सामाजिक आन्दोलन चलाने होंगे जिससे लिंग अनुपात को बढ़ाया जा सके। जिससे समाज में यौन उत्पीड़न के मामलों में भारी गिरावट देखने को मिलेगी। बेटियाँ जब पढ़–लिखकर आगे बढ़ेंगी तो घरेलू हिंसा, दहेज़ उत्पीड़न और भ्रूण हत्या जैसे अपराधों में भी भारी गिरावट देखने को मिलेगी इसीलिए देश को अपने इतिहास के पन्नों से महात्मा ज्योतिबा फुले जैसे महान विचारकों के विचार को बाहर निकालकर समाज में उन्हें प्रवाहित (फैलाना) करना होगा।

हे मानव बेटी को मत समझ भार,
वह है जीवन का आधार,
बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ
देश को खुशहाली के रास्ते पर लाओ ! ❑

लार्ड मैकाले द्वारा ब्रिटिश पार्लियामेंट में 2 फरवरी, 1835 को दिए गए अभिभाषण का अंश, 'मैंने भारत में चारों ओर भ्रमण किया है और मैंने किसी भी व्यक्ति को भीख मांगते और चोरी करते नहीं देखा। मैंने इस देश में ऐसी समृद्धि, ऐसे उच्च नैतिक मूल्य, ऐसे क्षमतावान व्यक्तियों को देखा है कि मैं सोच नहीं सकता कि कभी हम इस देश को जीत पाएंगे। जब तक कि हम इस देश की रीढ़ की हड्डी जो इसकी 'आध्यात्मिक एवं सांस्कृति विरासत' है को तोड़ न दें, इसलिए मैं प्रस्तावित करता हूं कि हम इनकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली, संस्कृति को ही बदल दें ताकि भारतीय सोचें कि जो भी विदेशी व अंग्रेजी है, वह उनके अपने से अच्छा है और महान है। इससे वह अपने स्वाभिमान और अस्मिता तथा संस्कृति को खो देंगे और वे वह बन जाएंगे जो हम चाहते हैं, वास्तविक अर्थ में एक गुलाम राष्ट्र।''

कार्यालयी पत्र–व्यवहार एवं अनुवाद की भूमिका

महिमानन्द भट्ट*

सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि सरकारी से अभिप्राय केवल सरकारी पत्राचार या टिप्पण से ही है, यह बात अंशतः ही सही है। वस्तुतः सरकारी भाषा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है इसमें एक ओर संसद अथवा विधानसभा में प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री, प्रश्नोत्तर आते हैं तो दूसरी ओर राजपत्रों में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाएं, आदेश आदि और जन–सामान्य के लिए समाचार–पत्रों में प्रकाशित होने वाली प्रैस–विज्ञाप्तियां भी आती हैं।

सरकारी या गैर–सरकारी कार्यालयों में होने या किए जाने वाले पत्र–व्यवहार तथा निजी पत्र–व्यवहार में पर्याप्त अंतर होता है। निजी पत्रों में किसी एक व्यक्ति अथवा एक वर्ग विशेष का ही हित–अहित जुड़ा रहता है, जबकि सरकारी या गैर–सरकारी कार्यालयों को लिखे जाने वाले पत्रों से संस्थानों के समग्र हित जुड़े रहते हैं।

कार्यालयी पत्र–व्यवहार के लिए ध्यान रखी जाने वाली बातें

- कार्यालयी पत्रों की एक सुनिश्चित एवं व्यवस्थित लेखन परम्परा होती है।
- कार्यालयी पत्रों का मसौदा पूर्णतः सुस्पष्ट तथा सरल होना चाहिए।
- कार्यालयी पत्र लेखन को अंतिम रूप देने के लिए उसका एक प्रारूप तैयार कर लेना चाहिए।
- यदि कुछ विशेष अधिकारियों को निर्णय की शक्ति प्रदान की गई हो तथा हस्ताक्षर के लिए उसे अधिकृत किया हो तो शासकीय पत्रों में– 'आज्ञा से', आदेश से जैसे वाक्यांश लिखकर हस्ताक्षर किए जाने चाहिए।
- शासकीय पत्रों का आरम्भ– ''मुझे यह कहने का निदेश हुआ है'' या ''मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है'' आदि वाक्यों द्वारा किया जाता है।

प्रारम्भिक वाक्यों को इस प्रकार देखा जा सकता है:–

''इस कार्यालय के पत्रांक ..... दिनांक ..... में वांछित जानकारी के सम्बन्ध में निवेदन है कि .....।''

माननीय अध्यक्ष महोदय के नाम उपर्युक्त विषय पर लिखे आपके पत्र संख्या..... दिनांक ..... के उत्तर में मुझे यह निवेदन करने का निर्देश हुआ है कि .....।''

सभी कार्यालयी पत्रों में 'अन्य पुरुष' का ही प्रयोग किया जाता है।

कार्यालीयन– पत्रों के प्रकार में निम्न को रखा जा सकता है:–

शासनादेश, सरकारी या शासकीय पत्र, अर्द्धसरकारी पत्र, अशासकीय/गैर सरकारी पत्र, परिपत्र, कार्यालय आदेश, कार्यालय ज्ञापन, अधिसूचना, सूचना, आदेश, अनुस्मारक पत्र, पृष्ठांकन, प्रस्ताव, प्रेस विज्ञप्ति, स्वीकृति/मंजूरी पत्र, निविदा सूचना

टिप्पण लेखन (Noting) की परिभाषा:–

किसी भी विचाराधीन पत्र या आवेदन पर उसके निष्पादन को सरल बनाने के लिए जो टिप्पणियाँ (Noting) सरकारी कार्यालयों में लिपिकों, सहायकों तथा कार्यालय अधीक्षकों द्वारा लिखी जाती हैं, उन्हें टिप्पण–लेखन कहते हैं।

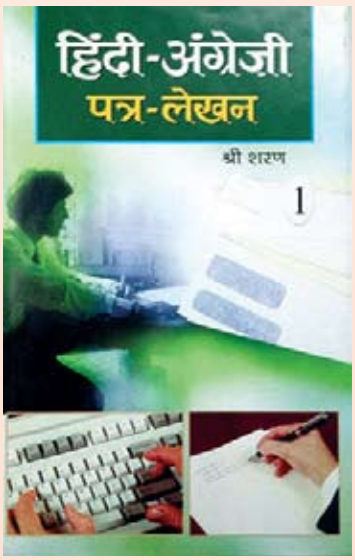

इन टिप्पणियों में तीन बातें रहती हैं:–

- उस पत्र से पूर्व के पत्र आदि का सारांश
- जिस प्रश्न पर निर्णय किया

* वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जाता है, उसका विवरण या विश्लेषण और

- उस सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की जाए, इस विषय में सुझाव और क्या आदेश दिये जाएं, इस विषय में भी सुझावों का उल्लेख।

टिप्पण के सम्बन्ध में कुछ विशिष्ट बातें इस प्रकार हैं:–

- टिप्पण बहुत लम्बा या विस्तृत नहीं होना चाहिए। उसे यथासम्भव संक्षिप्त और सुस्पष्ट होना चाहिए।
- कोई भी टिप्पण मूल पत्र (Original letter) पर नहीं लिखा जाना चाहिए। उसके लिए कोई अन्य कागज या नोट–शीट का प्रयोग करना चाहिए।
- टिप्पण में यदि किसी पत्र का खण्डन करना हो, तो वह बहुत ही शिष्ट और संयत भाषा में किया जाना चाहिए और किसी भी दशा में किसी प्रकार का व्यक्तिगत आरोप या आक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।
- यदि एक ही मामले में कई बातों पर अलग–अलग आदेश लिए जाने की आवश्यकता हो तो उनमें से हर बात पर अलग–अलग टिप्पण लिखना चाहिए।
- कार्यालय की ओर से लिखे जा रहे टिप्पण में उन सभी बातों या तथ्यों का सही–सही उल्लेख होना चाहिए जो उस पत्रावली के निस्तारण के लिए आवश्यक हों।
- यथासम्भव एक विषय पर कार्यालय की ओर से एक ही टिप्पण लिखा जाना चाहिए।
- जहाँ तक सम्भव हो, टिप्पण इस ढंग से लिखा जाना चाहिए कि पत्रावली में पत्र जिस क्रम से लगे हों, टिप्पण में भी उनका वही क्रम रहे।
- टिप्पण में ऐसे शब्दों का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए, जिनके अर्थ समझने में कठिनाई हो।

कार्यालय में पत्र–व्यवहार के साथ–साथ अनुवाद की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है क्योंकि भाषा का मूल उद्देश्य ही विचार व्यक्त करना है और अनुवाद का उद्देश्य है विचारों अथवा तात्पर्य को भिन्न भाषा में अभिव्यक्त करना या विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपान्तरित करना। अनुवाद कार्य का सीधा संबंध एक भाषा में कही गई या लिखी हुई

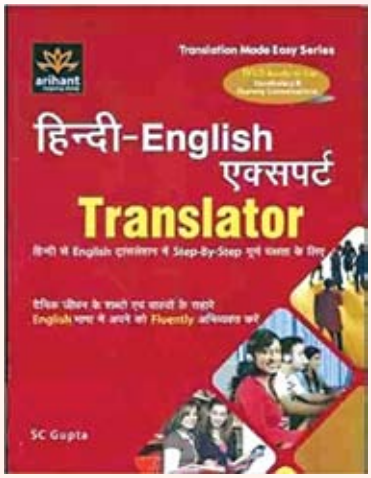

बात को दूसरी भाषा में उसके मर्म की रक्षा करते हुए प्रस्तुत करना है। अनुवाद का रास्ता अनेक कंटरीली झाड़ियों से भरा ऐसा बीहड़ रास्ता है जिस पर बहुत ही संभलकर चलना होता है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भी अनुवाद के विषय में कहा था– ''एक प्रकार से मौलिक लेख लेखना आसान है पर दूसरी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन है।'' पं. जवाहरलाल नेहरु के शब्दों में– ''ईमानदारी से किए गए शाब्दिक अनुवादों में सभी कुछ होगा सिर्फ आत्मा की ही कमी रहेगी।'' द्विभाषिक प्रक्रिया होने के कारण अनुवाद में दोहरी सतर्कता बरतनी पड़ती है इसलिए इसे कला के साथ–साथ विज्ञान का कार्य भी कहा जाता है। एक भाषा के विचारों को यथासंभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में भाषांतरित करने का प्रयास ही अनुवाद है, अर्थात् अनुवाद एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा की सामग्री में अंतरित करने का माध्यम है।

आधुनिक युग में शिक्षा के प्रचार–प्रसार तथा विश्व में हो रही नवीन चिंतन की अवधारणा को जल्द से जल्द आत्मसात करने की जिज्ञासा ने भाषा के आदान–प्रदान के महत्व को समझा है। यही वजह है कि अनुवाद के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण अधिक वैज्ञानिक तथा उदार है। नोबेल पुरस्कार विजेता अंग्रेजी उपन्यासकार विलियम जेराल्ड गोल्डिंग के अनुसार– "A book can never be translated perfectly, it can only be translated adequately and the translations are better than the book occasionally." अनुवाद ब्रह्माण्ड की सबसे जटिल प्रक्रिया है परंतु अनुवाद करते समय अनुवादक मानसिक स्तर पर एक चरण से गुजरते हुए दूसरे चरण पर इतनी सहजता से अनुवाद करता चला जाता है कि उसे इस बात का भान ही नहीं होता कि अनुवाद करते समय उसने अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को पार किया है। अनुवादक को किसी सामग्री का

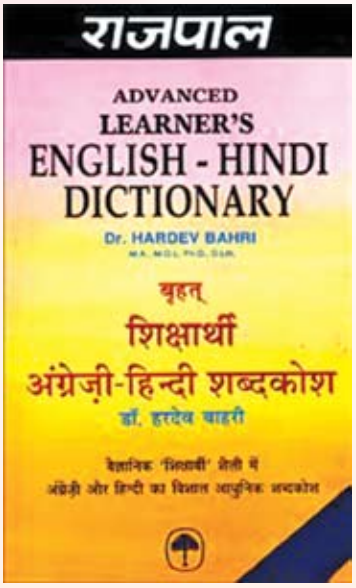

अनुवाद करने से पहले उस सामग्री को अच्छी तरह पढ़ना चाहिए। उसके अर्थ, वाक्यों तथा अभिव्यक्तियों को समझना पड़ता है। यदि इसके लिए व्याकरणिक ग्रन्थों या शब्दकोश का सहारा लेना पड़े तो उसे इसका सहारा लेना चाहिए। अर्थात अनुवाद में भाषान्तरण एक प्रमुख सोपान है। भाषान्तरण करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि स्रोत भाषा की सामग्री का निकटतम सहज समतुल्य रूप में भाव लक्ष्य भाषा में आ जाए और उसमें प्रभाव भी बना रहे। "It should read like original" अर्थात् अनुवाद मूलनिष्ठ (Faithfull) भी हो और पढ़ने में अनुवाद जैसा न लगे बल्कि मूल रचना जैसा प्रतीत हो। अंग्रेजी में भाषा की प्रकृति व शैली भिन्न होती है। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।

अनुवाद प्रक्रिया का अगला चरण है समायोजन। सामग्री को पढ़कर जहां कहीं भाषा की दृष्टि से अटपटा लगे उसमें प्रवाह लाया जाए। कई बार अनुवाद तो हो जाता है लेकिन उसमें थोड़ा बहुत संशोधन करने से वाक्य, पंक्ति आदि में प्रवाह आ जाता है। जैसे I have taken my food के लिए ''मैंने अपना खाना ले लिया है'' के स्थान पर ''मैंने खाना खा लिया है'' सही अनुवाद होगा। अनुवादक को स्रोत भाषा की अभिधात्मक, लक्षणात्मक और व्यंजनात्मक अभिव्यक्तियों तथा मुहावरों, लोकोक्तियों एवं कहावतों पर भी विशेष दृष्टि डालनी चाहिए। अनूदित सामग्री की स्रोत भाषा (Source Language) की सामग्री के साथ तुलना करना जिसमें यह देखना कि कुछ छूट तो नहीं गया है या कोई बात हटके तो नहीं कही जा रही है। यदि छूट गया हो तो उसका भी अनुवाद करना चाहिए। इस प्रकार अच्छा अनुवाद, अनुवाद की प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

अनुवाद प्रक्रिया के अंत में एक अंतिम चरण पुनरीक्षण का है। इस चरण में अनुवादक को यह अवश्य देख लेना चाहिए कि मूल पाठ का कोई अंश तो नहीं छूट गया है और अनूदित पाठ सुबोध और पठनीय है। भाषा की सहजता, बोधगम्यता, प्रवाहगम्यता तथा पठनीयता आदि की दृष्टि से भी भाषा का संस्कार करने से अनुवाद की गुणवत्ता बनाए रखना संभव हो जाता है।

निष्कर्षतः अनुवाद विभिन्न चरणों में होने वाला एक कार्य है तथा इसके प्रत्येक चरण का समान महत्व है। इसलिए अनुवाद के लिए तीन बातें जरूरी हैं:–

- अनुवाद का उद्देश्य मूल भाषा में व्यक्त भावों को यथासंभव उसी रूप में लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना है। इसका अर्थ यह है कि मूल के भाव का न तो अनावश्यक विस्तार होगा और न संकोच या परिवर्तन होगा।
- अनुवाद को लक्ष्य भाषा से वैसी ही अभिव्यक्ति की तलाश करनी होती है जो मूल भाषा से समानता या अधिक से अधिक समानता रखती है।
- अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि पढ़ने वाले को यह न लगे कि अनुवाद पर अंग्रेजी की छाया पड़ी है, अर्थात् अनुवाद मौलिक ही प्रतीत हो।

अच्छे अनुवाद में मूल के कथन को न तो विस्तृत किया जाता है और न ही संकुचित या परिवर्तित। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुवादक को मूल के प्रत्येक शब्द, पद या वाक्य तथा मुहावरे एवं लोकत्तियों को भी समझना होता है।

वास्तविकता यह है कि अनुवादक को दोहरा दायित्व निभाना पड़ता है। उसे शब्दों के सम्बन्ध में भी सजग रहना होता है और भाव व अर्थ की भी रक्षा करनी पड़ती है। अच्छे अनुवाद के लिये अर्थ या भाव पर ध्यान देना अधिक उपयुक्त होता है। वैसे आमतौर पर अनुवाद करते समय अनुवादक का ध्यान शब्दों पर ही अधिक जाता है। अच्छे अनुवाद के लिए न तो मूल में से कुछ छोड़ना चाहिए और न ही जोड़ना, पर हिन्दी की प्रकृति को देखते हुए छोड़ना भी पड़ता है, इसलिए अनुवादक की स्वतन्त्रता पर स्वयं ही बंधन लग जाता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सरकारी कामकाज में पत्र व्यवहार और अनुवाद की अहम भूमिका है। ज्ञान और अनुभव के आधार पर इस दिशा में किया गया कार्य न केवल उल्लेखनीय होता है बल्कि प्रशंसनीय भी साबित होता है। ❑

कर्मफल

रेखा दुबे*

अक्सर ये बात मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न कर देती है कि कौन सी आत्मा किस गर्भ में संसार के किस कोने में जन्म लेगी? मैंने यहाँ और उसने वहाँ क्यूँ जन्म लिया? मैं ऐसा और वो वैसा क्यूं है? लेकिन हम विवश हैं।

जैसा कर्म वैसा फल.... यही कर्मफल है। कर्म परफेक्ट नहीं है तो फल परफेक्ट कैसे होगा? कर्म एक समान नहीं है तो भाग्य एक समान कैसे होगा? जो हो रहा है मेरे कर्मों का फल है, ऐसा मानें और कोई ऐसा कर्म न करें कि फल दुखदायी मिले। इस योनि में आने के पश्चात् जो मिला उसे पूर्व जन्म के कर्मों का फल मानें और अपने वर्तमान के सद्कर्मों से अपने भविष्य की तस्वीर बदलिए।

हम अक्सर अपने जीवन की स्क्रिप्ट कुछ और ही लिखते हैं और नियति कुछ और ही करती है। सत्संग में जाते हुए किसी की मृत्यु की खबर आना या किसी धाम या तीर्थ के दौरान हादसा मस्तिष्क को सुन्न कर देता है जैसे केदारनाथ की प्रलय में हजारों लोगों का यूं जल विलीन हो जाना। उस समय हम ईश्वर से नाराज हो जाते हैं, हमारा विश्वास डोल जाता है। हमने ऐसा कुछ नहीं किया, फिर हमारे परिवार का इतना दुखद अंत क्यूँ हुआ। हमारा मानना है कि जो कुछ भी हो रहा है परमात्मा की मर्जी से। पत्ता–पत्ता ईश्वर की मर्जी से हिलता है तो हमारे कष्ट भी ईश्वरीय देन हैं। कभी सोचा है कि कोई अंबानी तो किसी को भिखारी का जीवन क्यों मिला। परमात्मा के लिए तो उसके सभी बच्चे बराबर हैं।

हम यह क्यों नहीं सोचते कि ईश्वर की हमसे ऐसी क्या दुश्मनी है। उसके बच्चे हैं हम। तो वो हमारे भाग्य में कुछ भी गलत कैसे होने देगा। अगर हमें हमारा और अपने बच्चों का भाग्य लिखने का मौका मिले तो सब कितना परफेक्ट होगा, हैल्थ, वैल्थ और एजुकेशन सब। क्या हम कभी ऐसा करेंगे कि एक बच्चे को पैसे का मोहताज बना दें और दूसरे के घर में धन की वर्षा। माता–पिता अपने किसी बच्चे का भाग्य लिखने में असमानता नहीं लाएंगे। तो फिर ईश्वर ऐसा क्यों करेगा..... ये हम नहीं सोचते। हमारा भाग्य न आज परफेक्ट है न एक समान ऐसा क्यूं? ये एक अविनाशी सत्य है कि कर्म का यही नियम है कि मैं जो करूंगा, वही पाऊंगा। ये बदल नहीं सकता। कर्म सिद्धांत अभेद है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति अपना उत्तरदायित्व समझे कि हमारे किस कर्म का हम पर, समाज पर और पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ेगा? फल अच्छा होगा या खराब ये कर्म से पहले सोचें। जो कर्म के सिद्धांत को नहीं मानते वे वर्तमान से ही जीवन का निष्कर्ष निकालते हैं। भविष्य में क्या होने वाला है या वर्तमान के दृश्य के बदलने की प्रतीक्षा हम नहीं करते। वर्तमान ही भविष्य का निर्माण करता है, इस तथ्य से हम कभी–कभी विमुख हो जाते हैं।

अपने आसपास हम महसूस करते हैं कि कई लोगों का आचरण दुराचारी है। किसी को सुधारने का ठेका हमारा नहीं है, कहकर हम अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन ईश्वर की अदालत में कुछ भी अनदेखा या अनसुना नहीं है। खुद को पछताने का मौका न दें। सद्कर्म के रास्ते पर चलना आसान है क्योंकि वहाँ भीड़ कम होती है। कभी–कभी हमारे साथ कोई बहुत बुरा करता है और हम उससे बदला भी लेना चाहते हैं लेकिन मन कहता है कि रहने दे। मैच्योरिटी भी तब है जब आपके पास किसी की गलती की सजा देने का अधिकार है और आप बस एक ठंडी सांस भरकर शांति से यह कहकर निकल जाएं कि इसके कर्म इसको ढूंढ ही लेंगे। देखा जाए तो ये भी बेहतर बदला है कि आप फल कर्म पर ही छोड़ दें। कर्म की गति दो दिशाओं में है अगर हम सदाचारी हैं तो जो बीज हमने बोया वो खुशियां लाएगा और अगर दुराचारी हैं तो बदहाली हमारा दरवाजा खटखटा कर रहेगी। जैसे बछड़ा हजारों गायों में अपनी मां को ढूंढ लेता है उसी प्रकार कर्म अपना कर्ता ढूंढ ही लेता है आज नहीं तो कल..... फिक्र न करो, तुम्हारे गुनाह तुम्हें तलाश ही लेंगे। कर्म कहता है कि तुम कभी नहीं समझोगे कि तुमने किसी का कितना नुकसान किया जब तक तुम्हारे साथ वैसा न हो.....इसलिए तो मैं हूं कर्म। ईश्वर शायद माफी दे भी दे लेकिन कर्म कभी नहीं देता। हमारे वेद और शास्त्र गवाह हैं कि ईश्वर को भी कर्मफल भुगतना पड़ा। विधाता की अदालत में हर एक की बारी है, कर्म के हिसाब से ही आपका मुकदमा जारी है। अपने कर्मों से फल का अंदाजा स्वयं लगाइये और खुद को समय रहते बदलिए.....कहीं देर न हो जाए।

करम तेरे अच्छे हैं तो, किस्मत तेरी दासी है,
नीयत तेरी अच्छी है तो घर में मथुरा, काशी है ।

* सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गंगा बाबू कौन?

गौरा पंत (शिवानी) हिंदी साहित्य में एक प्रसिद्ध नाम है। साठ और सत्तर के दशक में उनकी लिखी कहानियां और उपन्यास हिंदी पाठकों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुए। 12 वर्ष की अल्पायु में ही उनकी 'नटखट' रचना प्रकाशित हुई। वर्ष 1951 में उनकी कहानी 'मैं मुर्गा हूं' धर्मयुग पत्रिका में छपी। उनका पहला उपन्यास 'लाल हवेली' था। उन्होंने 40 उपन्यास लिखे जिसमें से प्रमुख कृतियां हैं– कृष्णकली, कालिंदी, चल खुसरो घर आपने, स्वयंसिद्धा, विषकन्या आदि। उन्होंने कहानी संग्रह, संस्मरण, यात्रा वृतांत तथा आत्मकथा भी लिखी। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1982 में पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया।

गंगा बाबू से मेरा परिचय आज से कोई दस वर्ष पूर्व ही हुआ था। किन्तु मुझे सदा ऐसा लगता था, जैसे वर्षों से उन्हें जानती हूं। मेरा एक संस्मरण पढकर, उन्होंने मुझे जब पत्र लिखा तो मैंने उन्हें कभी देखा भी नहीं था। किन्तु उस सरल पत्र की सहज–स्नेहपूर्ण भाषा ने जो चित्र उनका खींचकर रख दिया था, साक्षात्कार होने पर वे एकदम वैसे ही लगे। बूटा–सा कद, भारी–भरकम शरीर, सरल वेश–भूषा और गांभीर्य–मंडित चेहरे को उभ्दासित करती स्नेही मुस्कान। उन्होंने मेरे लेख को सराहा, यह मेरा सौभाग्य था। उस पत्र में उन्होंने लिखा था, ''संस्मरण ऐसा हो कि जिसे कभी देखा भी न हो, उसकी साक्षात् छवि ही सामने आ जाए, उसका क्रोध, उसकी परिहास रसिकता, उसकी दयालुता, उसकी गरिमा, उसकी दुर्बलता, सब कुछ सशक्त लेखनी आँकती चली जाए, वही उसकी सच्ची तस्वीर है, वही सफल संस्मरण।

तब कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन उसी दुर्लभ व्यक्तित्व पर लेखनी का फोकस साधना पडेगा, जिसने कभी संस्मरण का ककहरा सिखाया था। स्वयं वे अनेकानेक दुर्लभ संस्मरणों के जीते–जागते कोष थे। मैंने उनसे एक दिन कहा था, ''आप ऐसे बेजोड़ संस्मरण सुनाते हैं, कभी लिखते क्यों नहीं? एक ऐसा कोष बनाइए, जिसमें आपकी यह दुर्लभ निधि, सदा के लिए सुरक्षित रहे–फिर आपके सुनाने का ढंग भी अनोखा है.....

''देखो! वे गम्भीर होकर, सहसा शरारत–भरी मुस्कराहट में बिखर गए, ''जरूरी नहीं है कि जो संस्मरण सुनाने में माहिर हो, उसे लिखने में भी वैसा ही कमाल हासिल हो.....।''

उन्होंने मुझे जब भी किसी गोष्ठी की अध्यक्षता या किसी अनुष्ठान में उपस्थिति का आग्रह किया, मैंने सदैव उनके आदेश को सिरमाथे लिया। मैं बहुत कम बाहर जाती हूँ, किन्तु उनके पत्र में कुछ ऐसा आत्मीयतापूर्ण अभिजात्य रहता है कि मैं टाल नहीं पाती। एक बार आज से कोई आठ वर्ष पूर्व उन्होंने मुझे लक्खी सराय के बालिका विद्यापीठ में कन्याओं की विदा के अनुष्ठान पर आमंत्रित किया।

''यह विद्यालय राजेन्द्र प्रसादजी की प्रिय शिक्षण संस्था रही है। यहाँ की शिक्षा पूर्ण करने पर जब कन्याएँ विदा लेती हैं, तो उन्हें उसी स्नेह से विदा किया जाता है, जैसे पुत्री को मायके से विदा किया जाता है। गत वर्ष महादेवी जी पधारी थीं। उनके हाथ का लगा वृक्ष जिस अहाते में है, हमारी विदा हो रही कन्याओं की हार्दिक इच्छा है कि उसी के पार्श्व में आपके हाथों लगा वृक्ष लहलहाये। यात्रा कठिन अवश्य है, आपको कष्ट भी होगा, क्योंकि रेलवे स्टेशन नहीं है, किन्तु हमारे सहयोगी कार लेकर किऊल में उपस्थित रहेंगे। आपको आकर यह तो देखना ही है कि आपके प्रशंसक यहाँ भी कितनी बडी संख्या में हैं। साहस कर मैं गई तो रात को बारह बजे किऊल के जनहीन बीहड़ स्टेशन पर पहुँचते ही सहम गई। लोगों से सुन चुकी थी कि किऊल से लक्खी सराय का मोटर मार्ग निरापद नहीं है, डाके भी आए दिन होते रहते हैं, मुझे लेने गाड़ी आई थी। विद्यापीठ पहुँची तो अतिथिशाला और भी भयानक लगी। उस दिन बिजली भी चली गई थी। निराभरण कमरे में एक स्प्रिंग की पलंग पड़ी थी।

न कोई चौकीदार, न आसपास कोई मकान। थोड़ी देर में एक लम्बा–सा व्यक्ति, एक अधमरी लालटेन और एक मटके में पानी रख, तिरछा खड़ा होकर रहस्यमयी मुस्कराहट बिखेरता बोला, ''हम माली हैं। आप दरवाजा बंद कर आराम करें। हम उहाँ उस कोठरी में रहते हैं– खिड़की–दरवज्जा बंद रखिएगा, कभी–कभी साला करैत घुस आता है।

अपनी दिव्य वाणी की मिठास घोल वह लम्बी–लम्बी डगें रखता, अँधेरे में खो गया तो मुझे लगा, हो न हो, वह सीधे परलोक से चला आ रहा यमालय का ही माली है। वह स्याह चेहरा, टेढ़ी मुस्कान, खड़े होने की तिर्यक् भंगिमा और वह स्वरभंग करती विचित्र हँसी! कुछ देर तो

मैं भय से जड़ बनी बैठी ही रही। कहाँ फँसा दिया गंगा बाबू ने? रात को ही किसी अरक्षित छिद्र से रेंगे आए करैत ने डस लिया, तो मटके तक भी नहीं पहुँच पाऊँगी। किसी तरह खिड़की–दरवाजे बंद किए और रात–भर सो नहीं पाई। आधी रात से सियारों की जो संगीत सभा आरंभ हुई, शेष होने का नाम ही नहीं! एक दल की हुआ... हुआ समाप्त होती तो दूसरा दल जवाबी कीर्तन में डट जाता, उस पर दो–तीन उल्लू बारी से मेरा रक्तचाप बढ़ाते रहे। ''राम–राम कर रात कटी, जब सुबह होते ही टेढ़ा माली फिर वही टेढ़ी मुस्कान लिए हाजिर, हाथ मुँह धो लिया जाए, गंगा बाबू आपको बुलाइन हैं।

मैं उसके साथ कई मेड़ें पार कर पहुँची तो गंगा बाबू हँसते–हँसते बढ़ आए, ''आइए, आइए शिवानी जी, कोई कष्ट तो नहीं हुआ, नींद आई ना?

मैं उनसे क्या कहती? उस समय तो मैं चुप रही, फिर मैंने उनसे दबे स्वर में मेरे कहीं और रहने की व्यवस्था करने का आग्रह किया, ''आपने कल ही कह दिया होता, आप हमारी विद्या–बहन के साथ रहेंगी। वे स्वयं भी उन्हीं के अतिथि थे। फिर उन चार दिनों में उन्होंने जिस स्नेह से मेरी देखभाल की, उसे मैं कभी भूल नहीं सकती। मैं चलने लगी तो उन्होंने मेरे साथ चिवड़ा, घर का घी, और न जाने कितनी सौगातें बाँध दी, जैसे पुत्री को विदा कर रहे हों।

उस गुरुकुल के से वातावरण ने यात्रा की सारी थकान चार ही दिनों में मिटाकर रख दी। गंगा बाबू के कमरे में रात होते ही महफिल जम जाती। ऐसे–ऐसे चुटकुले सुनाते, ऐसे–ऐसे संस्मरण कि जी में आता वे सुनाते ही चले जाएँ और हम सुनते ही रहें।

मैं पटना भी उन्हीं के आग्रह पर गई थी। बाबू राजेन्द्र प्रसाद की मूर्ति का अनावरण करने को ही गई थी। किन्तु गंगा बाबू के साथ न जाने कितनी शिक्षण संस्थाओं की परिक्रमा की, यूनिवर्सिटी ले जाकर तत्काल एक अनौपचारिक गोष्ठी आयोजित कर मुझे खींचकर मंच पर खड़ी कर दिया,

''आपको बोलना ही होगा।''

बोलते–बोलते देखती, उनकी आँखों से जैसे स्नेह झर रहा है। मैं भाषण समाप्त कर उनके पास आकर बैठती तो बिना कुछ कहे वे मेरी पीठ थपथपाते। उस मौन स्पर्श में वे कितना कुछ कह जाते! आज उसी मूक–मौन स्पर्श की स्मृति मुझे विहल कर रही है। अभी कुछ ही माह पूर्व, लखनऊ आये थे, ''हिन्दी संस्थान में कोई आयोजन था, मैंने देखा जैसे अचानक ही टूट–से गए हैं। चलने में भी सहारा लेना पड़ रहा था। शरीर अभी भी पूर्ववत् था, किन्तु स्वयं उन्हीं के शब्दों में शिवानी, अब भीतर से सब कुछ खोखला होता चला जा रहा है.... अभी भी अस्पताल से भागकर आया हूँ– दिल्ली के डॉक्टर क्या किसी की सुनते हैं? बोले, ''आप कहीं नहीं जा सकते। बस, फिर हमने भी वही किया जो कभी बचपन में किया करते थे। डॉक्टर का राउण्ड खत्म हुआ तो बिस्तर में तकियों को रख ऐसे ढाँपा, जैसे हम सोए हों। शाम को फ्लाइट से पहुँच जाएँगे– फिर वही अस्पताल.....।

किन्तु इस बार वे डॉक्टरों को पक्का झाँसा देने में सफल रहे हैं, उनकी यह उड़ान अब पृथ्वी पर कभी नहीं उतरेगी.....।

हिंदी का यह सच्चा सफल सेनानी, कभी किसी प्रशस्ति का, यश–ख्याति का भूखा नहीं रहा। आज हिन्दी ऐसे ही पूतों के पुण्यों से बची है, जो जीवन भर हिंदी को समर्पित रहे, जिन्होंने हिन्दी के लिए सच्चे अर्थ में संघर्ष किया, किन्तु कभी भी अपने मुँह से अपने कृतित्व का प्रचार नहीं किया। शायद यही कारण है कि आज भी हिन्दी के ही क्षेत्र में कार्य करने वालों में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो यह भी नहीं जानते कि गंगा बाबू कौन थे। मुझे स्वयं एक बार ऐसी अनभिज्ञता ने क्षुब्ध किया था, जब भोपाल की ही एक गोष्ठी में मैंने गंगा बाबू की चर्चा की तो वहीं के एक ऐसे साहित्यकर्मी ने, जो प्रतिवर्ष लाखों की साहित्यिक रेवडियाँ बाँटते हैं, दबंग स्वर में पूछा था, ''यह गंगा बाबू हैं कौन?

यही आज हमारा दुर्भाग्य है। हम हिन्दी के उत्तुंग सौध को देख उसे सराहते हैं, जिन मजदूरों ने बाँस की जानलेवा खपच्चियों में चढ़, गारे–मिट्टी की काँवरें ढो, उसके झरोखों की दर्शनीय जालियों को सँवारा है, उसके दरीचों की सीमेंटी चिलमनों में जालियों के नक्शे बुने हैं, उन्हें भला कौन याद करेगा? अब तो हम हिन्दी के आलमगीर शामियाने के तले खडे हो सगर्व हिन्दी का जय–जयकार करने में विश्वास करते हैं, बहुत हुआ, तो एकाध शोकसभा कर ली, एकाध संपादकीय छप गए, जीवनकाल में किसी के कृतित्व को सराहना हमारी परंपरा के विरुद्ध है। हमारे यहाँ तो भले ही जीवनकाल में बाप बेटे की अवहेलना सहता रहे, उसके श्राद्ध–तर्पण में भारतीय बेटा कभी कार्पण्य नहीं बरतता, वही हम करते रहे हैं और करते रहेंगे– यही कारण है कि हम कभी–कभी ऐसा बेतुके प्रश्न पूछ बैठते हैं, ''ये गंगा बाबू हैं कौन? ❑

रंगीलो गुजरात–ज़ायकेदार गुजराती व्यंजन

नम्रता बजाज*

भारत एक बहुरंगी देश है। इस देश में भाषा, कला, संस्कृति, पहनावा, रहन–सहन, भोजन इत्यादि में विभिन्नता दिखाई देती है और यही इसकी विशेषता भी है। कहते हैं कि विविधता में ही जीवन का आस्वाद है। भारत के किसी भी कोने में जाएं पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण आपको हर स्थान पर नया रंग, नया रूप ही दिखाई देगा। इसकी विभिन्नता की पहचान सबसे पहले भोजन से ही हो जाती है। कई बार तो एक राज्य के अलग–अलग स्थानों पर ही यह विविधता दिखाई दे जाती है। इसी श्रृंखला में यदि हम गुजरात की बात करें तो हम पायेंगे कि गुजराती भोजन अत्यंत वैविध्यपूर्ण है।

भारत के पश्चिमी भू–भाग पर फैला गुजरात हिन्दू धर्म और जैन धर्म से प्रभावित होने के कारण मुख्यतः शाकाहारी प्रदेश है। यदि हम उत्तरी गुजरात से दक्षिणी गुजरात और सौराष्ट्र प्रदेश में जाएं तो हम पायेंगे कि गुजरात के भोजन में अत्यंत विविधता और भिन्नता है। दक्षिणी गुजरात के भोजन में महाराष्ट्र का प्रभाव देखने को मिलता है। यहाँ पर मीठे का कम प्रयोग किया जाता है। सौराष्ट्र एवं उत्तरी गुजरात का प्राथमिक आहार मकई एवं बाजरा है जबकि दक्षिणी गुजरात का ज्वार है। एक समय था जब केवल धनाढ्य वर्ग ही खाने में गेहूं का उपयोग करते थे और जनसामान्य केवल त्यौहारों पर गेहूं का प्रयोग करता था, किन्तु आज गेहूँ का ज्यादातर उपयोग होता है।

पारंपरिक गुजराती थाली में चार प्रमुख चीजें होती हैं– रोटली (गेहूं की रोटी), दाल या कढ़ी, चावल तथा सब्जी/शाक। इनके साथ हाथ से निकाला हुआ सफेद मक्खन, अचार, चटनी, पापड़, छांछ एवं सलाद का भी उपयोग किया जाता है। खाने में चावल के स्थान पर मूंग या मसूर की दाल और चावल से तैयार खिचड़ी भी खाई जाती है। गुजराती खाने में प्रमुखतः अदरक, लहसुन, हरी मिर्च, गुड़ तथा सही मात्रा में मसालों का प्रयोग किया जाता है। अनेक गुजराती पकवानों में थोड़ा–सा मीठा मिला होता है जो गुजराती भोजन की पहचान है। गुजरात के पानी में हल्का–सा नमकीन स्वाद होता है जिसे निष्क्रिय करने के लिए कुछ सब्जियों/शाक तथा दाल में मीठा डाला जाता है। इन पकवानों के मीठे, तीखे, खट्टे, नमकीन और मसालेदार स्वाद के बीच बहुत ही उचित संतुलन होता है। प्रमुख पकवानों में सब्जियों तथा दाल को भाप में पकाया जाता है और उसके बाद तेल में मसाले डालकर ऊपर से बघार लगाया जाता है जो मुख्य सामग्री की पाचन गुणवत्ता को बनाए रखता है। मौसम और तापमान के अनुसार भी भोजन में फेरबदल किया जाता है। जिन क्षेत्रों में तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है वहां निर्जलीकरण (डी–हाइड्रेशन) से बचने के लिए नमक, चीनी, नींबू तथा टमाटर का बहुधा प्रयोग किया जाता है। गर्मियों में गरम मसाले आदि का कम प्रयोग किया जाता है।

गुजरात में सामान्यतः तुवर (अरहर) की दाल तथा मूंग की दाल प्रयोग में लाई जाती है। चने की दाल के आटे को बेसन के रूप में फरसान (स्नैक्स) एवं मिठाई बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। गेहूं के आटे से भाखरी, शीरा एवं लवू बनाया जाता है। कुरकुरे दले गेहूँ के आटे को फाड़ा कहते हैं।

सौराष्ट्र के नज़दीक के गांव में सर्दी के दिनों में बहुत ही लोकप्रिय स्वास्थ्यवर्धक भोजन मिलता है जिसमें भाकरी नामक बाजरे के आटे से बनी मोटी रोटी के साथ लहसुन की चटनी, प्याज तथा छांछ होती है।

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

इससे सर्दी के दिनों में खेतों में काम करने वाले ग्रामीणों को पर्याप्त गर्मी मिलती है। त्यौहारों, शादी–ब्याह और पारिवारिक उत्सवों पर बनाई जाने वाली मिठाइयां जैसे कंसार, लापसी, शीरा, घूघरा आदि गन्ने, गुड़, दूध, बादाम तथा पिस्ते आदि से बनाई जाती है। इन व्यंजनों में पानी एवं चीनी का उपयोग आवश्यकतानुसार कम या ज्यादा किया जा सकता है। गुजराती मीठे में श्रीखंड, जलेबी आदि भी अत्यंत लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त मिठाइयों में तो मोहनथल, काजू/बादाम कतरी, महसुर आदि की लंबी सूची है।

गुजरात में बनने वाले फरसाण (स्नैक्स) तथा शाक–सब्जी का अपना अलग ही स्वाद है। खांडवी, ढोकला, चनादाल वड़ा, पातरा, खाखरा आदि के स्वाद से तो भला कौन अपरिचित है। इसके अतिरिक्त खस्ता कचौड़ी, सेवखमनी, भाजिया, गोटा, उन्धियु, मीठी कढ़ी, मेथी, मटर, मकई पकवानों की अपनी अलग पहचान है। पापड़ी को कच्चे पपीते की चटनी तथा सरसों में लिपटी हरी मिर्चों के साथ खाया जाता है। यह पापड़ी बेसन से बनाकर तली जाती है जो तली, लंबी, मसालेदार होती है। इसके अलावा रागदो पैट्टीज़ जिसमें तले हुए आलुओं का स्वादिष्ट कटलेट मटर, प्याज और इमली की चटनी से तैयार किया जाता है। साथ ही पांरपरिक मीठे में कुल्फी और चाट जैसे भेलपूरी और पानी–पूरी भी खाई जाती हैं।

दक्षिणी गुजरात में लाल मिर्च के स्थान पर हरी मिर्चों का अधिकतम प्रयोग किया जाता है तथा सब्जियों को हरा बनाये रखने तथा जल्दी पकाने के लिए सोडियम बाइकार्बोनेट का भरपूर प्रयोग होता है। इनमें तेल का भी अधिक प्रयोग किया जाता है। यही कारण है कि अन्य स्थानों की अपेक्षा यहां की

शाक/सब्जियां आदि पकवान अधिक हरे दिखाई देते हैं। दक्षिणी गुजरात के सबसे बड़े शहर सूरत में सर्दी के दिनों में सब्जियों के मिश्रण से तैयार स्वादिष्ट उन्धियु तथा मीठे में जलेबी, धारी और घेवर का विशेष महत्त्व है।

गुजरात राज्य के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित सौराष्ट्र प्रदेश (जिसे काठीयावाड़ भी कहते है) में खाए जाने वाले फरसाण में भजिया अत्यधिक स्वादिष्ट होती है। इसमें आलू के गोल और पतले–पतले स्लाइस काटकर मसालेदार बेसन के घोल में डालकर तला जाता है। काठीयावाड़ की विशेषताओं में टामेटा–सेव नू शाक (टमाटर के साथ बनाई गई सब्जी), रिंगन नो ओलो (इसमें बैंगन को पकाने से पहले अंगीठी पर पूरा भूना जाता है) तथा भरेला भिंडा (भरवां भिंडी) सम्मिलित हैं। इस क्षेत्र में भोजन के साथ दही और छांछ जरूर खाई जाती हैं।

गुजरात में रात का खाना खाने के बाद पान और मसाला चाय भी पी जाती है। गुजराती जायका इतनी विविधताओं से भरा है कि खाने वाले का पेट भर जाएगा परंतु दिल नहीं भरेगा। इतने स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद एक बार तो चखना ही चाहिए। है ना! ❑

रचनाकार कृपया ध्यान दें

1. कृपया पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख सीधे निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के मेल : rajbhasha.cwc@gmail.com पर या डाक द्वारा भेजें।
2. रचनाएं भेजते समय कृपया इस बात का ध्यान रखें कि वह स्तरीय हों तथा समाज, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ी हुई हों।
3. भंडारण से संबंधित रचनाओं को प्रकाशन के लिए प्राथमिकता दी जाएगी तथा प्रकाशित रचनाओं पर पुरस्कार या मानदेय भी प्रदान किया जाता है। **पुरस्कार या मानदेय के लिए रचना के साथ ई-भुगतान हेतु अपना बैंक विवरण भी अवश्य भेजें।**
4. आप अपनी रचनाएं निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं:–

प्रबंधक (राजभाषा), केन्द्रीय भंडारण निगम
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–1100016

द्वादश ज्योतिर्लिंग – एक श्रृद्धा

पी.एस. गुंसाई*

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालम, ओंकारम–मलेश्वरम!!–1
परल्यां वैद्यनाथं च, डाकियन्या भीमशंकरम्
सेतुवन्धे तु रामेशं, नागेशं दारूकावने!!–2
वारणस्यां तु विश्वेशं, त्रयम्बकं गौतमीतटे
हिमालये तु केदारं ध्रुश्मेशं च शिवालये!!–3
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नर
सप्तजन्मकृत पापं स्मरेण विनश्यति!!–4

शिव पुराण के कोटिरूद्र संहिता में वर्णित कथानक के अनुसार भगवान शिव प्राणियों के कल्याण हेतु जगह–जगह तीर्थों में भ्रमण करते रहते हैं तथा लिंग के रूप में वही निवास भी करते हैं कुछ विशेष स्थानों पर शिव के उपासकों ने निष्ठा के साथ तन्मय होकर भूतभावन की आराधना की थी, उनके भक्तिभाव के प्रेम से आकर्षित भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिया तथा उनके मन की अभिलाषा को भी पूर्ण किया था, उन स्थानों में प्रकट दयालु शिव अपने भक्तों के अनुरोध पर अपने अंशों से सदा के लिए वहीं अवस्थित हो गये। ज्योतिर्लिंग के रूप में साक्षात भगवान शिव जिन–जिन स्थानों में विराजमान हुए, वे सभी तीर्थ के रूप में महत्व को प्राप्त हो गये।

सम्पूर्ण तीर्थ ही लिंगमय है तथा सब कुछ लिंग में समाहित है, वैसे तो शिवलिंगों की गणना अत्यन्त कठिन है, जो भी दृश्य दिखाई पड़ता है अथवा किसी भी दृश्य का स्मरण करते हैं, वह सब भगवान शिव का ही रूप है, पृथक कोई वस्तु नहीं है। सम्पूर्ण चराचर–जगत पर अनुग्रह करने के लिए ही भगवान शिव ने देवता, असुर, गन्धर्व, राक्षस तथा मनुष्यों सहित तीनों लोकों को लिंग के रूप में व्याप्त कर रखा है, भूमण्डल के लिंगों की गणना तो नहीं की जा सकती, किन्तु उनमें उपरोक्त स्तुति के अनुसार, भारत वर्ष में 12 ज्योतिर्लिंग हैं जहां भगवान शिव ज्योति रूप में प्रकट हुए हैं।

भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग देश के अलग–अलग भागों में स्थित हैं। इन्हें द्वादश ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है। इन ज्योतिर्लिंग के दर्शन, पूजन, आराधना से भक्तों के जन्म–जन्मांतर के सारे पाप समाप्त हो जाते हैं। ऐसे कल्याणकारी ज्योतिर्लिंगों की कथा इस प्रकार हैः–

श्री सोमनाथः– गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में, समुद्र के किनारे सोमनाथ नामक विश्व प्रसिद्ध मंदिर में यह ज्योतिर्लिंग स्थित है। पहले यह प्रभास क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। यहीं भगवान कृष्ण ने जरा नामक व्याध के बाण को निमित्त बनाकर अपनी लीला का संवरण किया था। यहां के ज्योतिर्लिंग की कथा का पुराणों में इस प्रकार वर्णन है। दक्ष प्रजापति की सत्ताईस कन्यायें थीं, उन सभी का विवाह चन्द्रमा के साथ हुआ था, परन्तु चन्द्रमा का समस्त अनुराग व प्रेम केवल रोहिणी के प्रति था। उनके इस कृत्य से दक्ष प्रजापति की अन्य कन्यायें बहुत अप्रसन्न रहती थीं। उन्होंने अपनी यह व्यथा अपने पिता को सुनाई। दक्ष प्रजापति ने इसके लिए चन्द्रदेव को अनेक प्रकार से समझाया, किन्तु रोहिणी के वशीभूत उनके हृदय पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अंततः दक्ष ने क्रोधित होकर उन्हें क्षयग्रस्त हो जाने का शाप दे दिया। इस शाप के कारण चन्द्रमा क्षयग्रस्त हो गये। उनके क्षयग्रस्त होते ही पृथ्वी पर सुधा, शीतलता, वर्षण का सारा कार्य रुक गया। चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई, चन्द्रमा भी बहुत दुखी और चिंतित थे। उनकी प्रार्थना सुनकर देवता तथा वशिष्ठ आदि ऋषिगण ब्रह्मा जी के पास गये। ब्रहमा जी ने कहा चन्द्रमा अपने शाप–विमोचन के लिए अन्य देवों के साथ प्रभास क्षेत्र में जाकर मृत्युंजय भगवान शिव की अराधना करें, उनकी कृपा से अवश्य ही इनका शाप नष्ट हो जाएगा और ये रोगमुक्त हो जायंगे। चन्द्रदेव ने मृत्युंजय भगवान की आराधना की और 10 करोड़ बार मृत्युंजय मंत्र का जाप किया इससे प्रसन्न होकर मृत्युंजय भगवान ने

पूर्व एसआईओ, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

उन्हें अमरत्व का वरदान दिया। तत्पश्चात भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में वहीं अवस्थित हो गये।

2. श्री मल्लिकार्जुनः– एक बार भगवान शिव ने गणेश और कार्तिकेय से एक शर्त रखी कि जो सबसे पहले पूरे भूमण्डल की परिक्रमा करके आएगा, उसका विवाह पहले होगा, कार्तिकेय पूरे भूमण्डल की परिक्रमा करने निकल गये। गणेश ने सोचा कि इतनी बड़ी परिक्रमा कौन करेगा, इससे अच्छा माता–पिता की परिक्रमा कर लूंगा तो पूरे भूमण्डल की परिक्रमा हो जायेगी। अपने माता–पिता की परिक्रमा करने से ही, भगवान शिव और माता पार्वती संतुष्ट हो गये और उन्होंने गणेश का विवाह कर दिया। जब कार्तिकेय लौटकर आये तो गणेश का वृतान्त सुनकर रुष्ट हो गये और गुस्से में क्रोंच पर्वत पर चले गये। पार्वती के अनुरोध पर, शिवजी और पार्वती क्रोंच पर्वत पर चले गए, परन्तु अपने माता–पिता का आगमन सुनकर कार्तिकेय पर्वत को छोड़कर तीन योजन दूर चले गये। वहां पुत्र न मिलने पर वात्सल्य से व्याकुल शिव पार्वती ने उनकी खोज में अन्य पर्वतों पर जाने से पहले वहां अपनी ज्योति स्थापित कर दी। उसी दिन से यह ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन कहलाया।

3. श्री महाकालेश्वरः– यह परम पवित्र ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश में उज्जैन नगर में है। उज्जयिनी राजा चन्द्रसैन, परम शिव भक्त थे। इनकी भक्ति को देखकर एक पांच वर्ष का गोप बालक बहुत प्रभावित हुआ, उसने रास्ते से एक पत्थर उठाया और घर ले जाकर उस पत्थर को लिंग रूप में स्थापित कर दिया और उसकी पूजा करने लगा। माता ने भोजन करने के लिए बालक को बुलाया परन्तु वह नहीं आया, तब माता ने क्रोध में वह पत्थर उठाकर कहीं दूर फेंक दिया। इतने में बालक फूट–फूट कर रोने लगा, रोते–रोते वह वहीं गिर पड़ा, बालक की इस अद्भुत भक्ति को देखकर भगवान शिव अति प्रसन्न हुए और भगवान शिव, गोपी पुत्र द्वारा पूजित पत्थर में ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हो गये। बालक की खुशी का ठिकाना न रहा, तभी हनुमान जी प्रकट हुए और कहा कि यह बालक आठवी पीढ़ी में नन्द बाबा के नाम से जाना जायेगा और भगवान कृष्ण इनके यहां तरह–तरह की लीला करेंगे।

4. श्रीओंकारेश्वरः– यह ज्योतिर्लिंग मध्यप्रदेश में पवित्र नर्मदा नदी के तट पर है। इस स्थान पर नर्मदा नदी के दो धाराओं में विभक्त हो जाने से एक टापू–सा बन गया है। इस पर्वत को मान्धाता पर्वत या शिव पर्वत कहते हैं। इस मान्धाता पर्वत पर श्री ओंकारेश्वर का ज्योतिर्लिंग स्थित है। पूर्व काल में मान्धाता ने इसी पर्वत पर अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया था। इसी से इस पर्वत को मान्धाता पर्वत कहते हैं। मान्धाता की तपस्या से प्रसन्न होकर, भगवान शिव ज्योतिर्लिंग के रूप में अवस्थित हो गये।

5. श्रीवैद्यनाथः– यह ज्योतिर्लिंग बिहार प्रान्त के सन्थाल परगने में स्थित है, एक बार रावण ने हिमालय पर भगवान शिव की कठोर तपस्या की, फिर भी शिवजी प्रसन्न नहीं हुए तो, रावण अपने सिर काट–काट कर शिवलिंग पर चढ़ाने लगा, तब शिवजी प्रकट हो गये और उसे वर मांगने के लिए कहने लगे। तब रावण ने कहा कि मैं आपको अपनी लंका में इसी लिंग रूप में ले जाना चाहता हूँ। इस पर भगवान शिव ने उसे वरदान तो दे दिया परन्तु एक शर्त रख दी कि यदि इस लिंग को कही भी धरती पर रखा तो यह वहीं स्थिर हो जायेगा। जब रावण शिवलिंग को ले जा रहा था तो उसे रास्ते में लघु शंका लग गई। उसने उस लिंग को एक गोप के हाथ में पकड़ा दिया परन्तु वह गोप उस लिंग का भार सहन न कर पाया और उसने लिंग को वहीं धरती पर रख दिया और वहीं वह लिंग ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गया।

6. श्रीभीमाशंकरः– यह ज्योतिर्लिंग पूना से 100 किमी. दूर एक सह्यायाद्री की पहाड़ी पर स्थित है। भीम नामक एक राक्षस था। वह कुंभकर्ण का बेटा था, जब कुंभकर्ण का भगवान राम ने वध कर दिया तो उसने बदला लेने के लिए ब्रह्मा की कठोर तपस्या की,

उसकी इस तपस्या से ब्रहमा ने उसे लोक विजयी होने का वरदान दे दिया। इस तरह उसने सभी लोकों पर विजय प्राप्त कर ली और कामरूप के परम शिवभक्त राजा सुदक्षिण पर विजय प्राप्त कर उन्हें बन्दी बना दिया। सुदक्षिण ने कारागार में भगवान शिव की आराधना करना बन्द नहीं किया, इस पर क्रोधित भीम राक्षस ने सुदक्षिण पर तलवार से प्रहार करना चाहा, परन्तु उसकी तलवार वहां तक नहीं पहुँच पाई, भगवान शिव वहीं प्रकट हो गये और भीम राक्षस को भस्म कर दिया। राजा के आग्रह पर भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में स्थापित हो गये।

7. श्रीरामेश्वरमः– भगवान राम जब सीता माता की खोज में निकले तो हनुमान जी की सहायता से उन्हें सीता माता का पता चला परन्तु जब उन्हें ध्यान आया कि रावण शिवजी का बहुत बड़ा भक्त है तो उन्होंने शिव पूजन की सामग्री तैयार की उसी समय उन्होंने भगवान शिव का पार्थिव लिंग बनाकर वेद मन्त्रों से पूजा की और शिवजी से निवेदन किया है कि 'हे! भोलेनाथ यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यहां ज्योतिर्लिंग के रूप में लोक कल्याण के लिए निवास कीजिए। तत्पश्चात भगवान शिव वहां पर ज्योतिर्लिंग रूप में रामेश्वर नाम से स्थापित हुए।

8. श्रीनागेश्वरः– भगवान शिव का यह ज्योतिर्लिंग गुजरात प्रान्त में द्वारकापुरी से लगभग 17 मील की दूरी पर अवस्थित है, सुप्रिय नाम का एक वैश्य शिव की आराधना में तल्लीन रहता था, दारुक नामक राक्षस उनकी घोर आराधना से क्रोधित हुआ। उसने सुप्रिय को कारागार में बन्द कर दिया, परन्तु सुप्रिय ने अपनी पूजा अर्चना नही छोड़ी, दारुक ने अपने अनुचरों को सुप्रिय को मारने का आदेश दिया, परन्तु उसके इस आदेश से वह विचलित नहीं हुआ। सुप्रिय की प्रार्थना पर भगवान शिव ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हो गये।

9. श्रीविश्वेश्वरः– यह ज्योतिर्लिंग उत्तर भारत की प्रसिद्ध नगरी काशी में स्थित है। सृष्टि की आदि स्थली इसी नगरी को बताया जाता है। एक बार पार्वती ने भगवान शिव से विनती की कि हम अपने मायके यानी कैलाश पर्वत पर कब तक रहेंगे, चलो अपने स्थान काशी चलते हैं। इस पर भगवान शिव ने मां पार्वती की प्रार्थना स्वीकार की और उनकी प्रेरणा से शिव–शक्ति रूप में तप हेतु निवास करने लगे। तत्पश्चात भक्तों के आग्रह पर भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में श्री विश्वेश्वर नाम से स्थापित हो गये।

10. श्रीत्र्यम्बकेश्वरः– यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र प्रान्त में नासिक से 30 कि. मी. दूर पश्चिम में स्थित है। महर्षि गौतम पर छल पूर्वक गौ हत्या लग गई, गौ हत्या के निवारण के लिए उन्होंने भगवान शिव की आराधना की और गौ हत्या पाप से मुक्ति पाने के लिए गंगा जी को लाने का प्रयास किया और एक करोड़ शिव लिंग बनाकर शिव की आराधना करने लगे। इस पर भगवान शिव प्रसन्न हुए और महर्षि गौतम ने गौ हत्या के पाप से मुक्त होने का वर मांगा। शिवजी ने कहा, गौतम तुम निष्पाप हो, गौ हत्या तुम पर छलपूर्वक लगाई गई, मैं उन्हें अवश्य दण्ड दूंगा। गौतम ने कहा, प्रभु ऐसा ना करें, उन्हीं की वजह से मुझे आपके दर्शन हुए, उन्हें क्षमा कर दो तथा उन्हें गंगा देकर संसार का उपकार करने का वर मांगा। गौतम को पवित्र कर गंगा ने स्वर्ग में वापिस जाने का निश्चय किया परन्तु शिवजी के इंकार करने पर गंगा जी ने शिवजी से प्रार्थना की कि आप भी मां पार्वती सहित यहीं निवास करें।

11. श्रीकेदारेश्वरः– यह ज्योतिर्लिंग उत्तराखण्ड प्रान्त के केदार नामक चोटी पर मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। जब महाभारत युद्ध समाप्त हो गया था, तो पांचों पाण्डवों ने युद्ध में मारे गये अपने परिजनों की मुक्ति के लिए भगवान शिव की घोर तपस्या की परन्तु भगवान शिव पाण्डवों से अन्यायपूर्ण युद्ध जीतने के कारण नाराज थे और उन्होंने उन्हें दर्शन नहीं दिया। काफी अनुनय–विनय के बाद आकाशवाणी हुई कि पांण्डवों

यदि मेरा दर्शन करना चाहते हो तो केदारखण्ड में जाकर मुझे पहचान लेना। मैं किसी भी रूप में दर्शन दे सकता हूँ। भगवान शिव ने भैंस का रूप धारण किया और अपनी तरह कई भैसों का रूप बना दिया परन्तु उनमें एक भैंस अलग–सी दिखती थी जिसे भीम ने पहचान लिया। भीम ने जैसे उस भैंस को रोकने के लिए उसकी पूंछ पकड़ी, उस भैंस का आधा हिस्सा यानी सिर से कमर तक नेपाल पहुंच गया परन्तु भैंस की पीठ केदारखण्ड में स्थापित हो गई। कथा इस प्रकार है कि सभी ज्योतिर्लिंग में पानी या दूध चढ़ता है, परन्तु इस ज्योतिर्लिंग में सिर्फ घी चढ़ता है।

12. श्रीघर्षणेश्वर महादेवः– यह महाराष्ट्र में दौलताबाद से 12 किमी. दूर वेरूल गांव में स्थित है। कथा इस प्रकार है, सुधर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी कोई संतान नहीं थी। अपनी पत्नी सुदेहा के आग्रह पर सुधर्मा ने संतान प्राप्ति के लिए उसकी बहिन घुश्मा से विवाह कर लिया, घुश्मा शिव भक्त थी। समय आने पर घुश्मा का एक पुत्र हुआ। परन्तु घुश्मा ने अपनी पूजा नहीं छोड़ी। सुदेहा को धीरे–धीरे घुश्मा से ईर्ष्या होने लगी और एक दिन उसने घुश्मा के पुत्र की हत्या कर दी और शव को तालाब में फेंक दिया। शव बहता–बहता तालाब के किनारे चला गया और उसी समय भगवान शिव प्रकट हो गये और सुदेहा को दण्ड देने को उद्धत हो गये। इस पर घुश्मा ने भगवान से प्रार्थना की कि आप इसे माफ कर दें और पुनः आग्रह किया कि लोक कल्याण के लिए आप ज्योतिर्लिंग रूप में यहीं स्थापित हो जायें। इस पर भगवान शिव ने घुश्मा की प्रार्थना स्वीकार की और वहीं ज्योतिर्लिंग रूप में अवस्थित हो गये।

जो भी भक्त भगवान शिव के उपरोक्त 12 ज्योतिर्लिंगों का प्रातः काल स्मरण करता है, वह सारे पापों से मुक्त हो जाता है तथा शिवलोक में निवास करता है। भगवान भोलेनाथ इतने भोले हैं कि हर भक्त की इच्छा पूरी करते हैं, चाहे वह कितना भी मलीन क्यों न हो। जरूरत है तो सिर्फ श्रद्धा और विश्वास की। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि **श्रद्धावानं लभ्यते ज्ञानम्** – यानी श्रद्धावान को ही ज्ञान प्राप्त होता है, ऋगवेद में भी श्रद्धा को श्रेष्ट ऐश्वर्य बताया गया है। रामचरित मानस में बाबा तुलसी कहते हैं:–

भवानी शंकरों वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपेणों
याभ्यामं बिना न पश्यन्ति सिधा स्वान्तःस्थमीश्वरम्!!

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वतीजी और श्री शंकरजी की मैं वन्दना करता हूं, जिनके बिना सिद्ध जन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते।

भगवान शिव अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए ही ज्योतिर्लिं के रूप में जगह–जगह स्थापित हुए। यह उन्हीं की कृपा का प्रसाद है, जिससे करोड़ों भक्त श्रृद्धा और आस्था का स्वाद लेते रहते हैं। ❑

''नारीत्व''

पारसनाथ सिंह*

बात करते हैं जो नारी उत्थान की,
उन्हीं को नारियों का पतन करते देखा है।
बात जो करते हैं सभ्यता, संस्कृति की
उन्हीं को यहाँ पतन करते देखा है।।

डस लेगा ये सर्पों से हम सतर्क हो लेते हैं,
यूं सभी विषधरों से खुद को बचा लेते हैं।
है महारत हासिल इन्हें ही बस, रूप बदलने का
मानुष रूप को सर्पों में बदलते देखा है।।
उन्हीं.....

घर में मिली दबेपन की संरक्षण इन्हें,
कहने को तो सर्वत्र है आरक्षण इन्हें।
अभिशाप इस चरित्र का हम कैसे मिटा सकेंगे,
मां के ममता में ही जब कलुषिता को पलते देखा है।।

जागृत खुद हो उठेगा समाज नारीत्व को जगाना होगा,
आरक्षण के तमगे को खुद से हटाना होगा।
सक्षम है, नारी इतिहास गवाह रहा इसका,
सहज रूप को रण चण्डी में बदलते देखा है।।
उन्हीं को.....

* ममा बजार (फैजाबाद), डिस्ट्रिक्ट कोऑपरेटिव सभा (फैजाबाद उत्तर प्रदेश)

महान कर्मयोगिनीः अहिल्याबाई होलकर

डॉ. मीना राजपूत*

इतिहास साक्षी है सदियों से राष्ट्र के समग्र निर्माण व विकास में तथा राजनैतिक व सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी भूमिका बखूबी निभायी है और उनका सक्रिय योगदान रहा है। युगदृष्टा, युगसृष्टा, स्वयं सिद्ध महिलाओं के चरित्र हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। मध्यकाल में ऐसी ही एक महिला – अहिल्याबाई होलकर – ने अपनी मेधा, अदम्य साहस, शौर्य एवं कर्मठता का परिचय देते हुए उत्तम विचारों तथा अभूतपूर्व कार्यों से अपने समय में तो लोगों को प्रभावित किया ही, आज भी वे समूचे देश के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

आदर्श व महान शासक मालवा प्रांत की महारानी अहिल्याबाई होलकर अलौकिक गुणों, ज्ञान, शील व शक्ति से सम्पन्न नारी थीं। परम तेजस्वी, दूरदर्शी, कर्मठ अहिल्याबाई अपनी उदारता और प्रजावत्सला के लिए बेहद प्रसिद्ध थीं। साहसी योद्धा एवं बेहतरीन तीरंदाज अहिल्याबाई ने कई युद्धों में अपनी सेना का नेतृत्व किया था और हाथी पर सवार होकर वीरता के साथ लड़ी थीं। भारत की धर्मपरायण व सर्व कल्याणकारी हिन्दू संस्कृति की साक्षात प्रतिमूर्ति अहिल्याबाई महानता में अद्वितीय थीं। अहिल्याबाई के उत्कृष्ट विचारों, जन–कल्याण कार्यों और न्यायप्रिय शासन के चलते उन्हें समाज में देवी और लोकमाता का दर्जा मिला था।

भारत की 18वीं सदी की महिला शासिका अहिल्याबाई का जन्म 31 मई, 1725 को चौंडी गांव के पाटिल मनकोजी राव शिंदे के यहाँ हुआ था। चौंडी महाराष्ट्र में अहमदनगर के पास बसा गांव है। पिता मनकोजी धनगर समाज के साधारण गृहस्थ थे, परंतु वे बड़े सात्विक, सरल व धर्म–परायण व्यक्ति थे। अहिल्याबाई की माता सुशीला बड़ी ही विदुषी, धार्मिक विचारों वाली, कर्तव्यी–परायण महिला थीं। पूजा–पाठ करना और कथा–भागवत् सुनना उनका नित्य का काम था। अहिल्याबाई सदा अपनी माँ के साथ रहतीं और उनके साथ सारे धार्मिक कार्यों में भाग लेतीं, इसलिए बचपन से ही व्रत व पूजा पाठ करने और धर्म–ग्रन्थों को सुनने में उनका मन रम गया था। ईश्वर में अविचल श्रद्धा रखने वाली अहिल्याबाई के जीवन पर माता–पिता का प्रभाव पड़ा।

तत्कालीन भारत में महिलाओं का स्थान समाज में अत्यन्त गौण होने के चलते महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय और सामाजिक बंधनों में जकड़ी हुई थी। उनकी शिक्षा व विकास के कोई अवसर नहीं थे। चौंडी गांव में भी कोई स्कूल न था इसलिए अहिल्याबाई को भी विद्यालयीन शिक्षा नहीं मिली थी। घर ही उनकी पाठशाला व माता–पिता ही उनके शिक्षक थे। अहिल्याबाई के पिता मनकोजी ने अहिल्याबाई को घर पर ही लिखना–पढ़ना सिखाया। श्रेष्ठ धार्मिक ग्रंन्थों के पठन व इन ग्रन्थों के श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिदिन श्रवण के कारण अहिल्याबाई को धर्म, नीति, दर्शन, आचार, कर्तव्य आदि का सहज बोध था। मराठी, संस्कृत, हिन्दी व मोड़ी वे लिख–पढ़ व समझ लेती थीं।

चौंडी गांव में भगवान शिव का छोटा–सा प्राचीन मंदिर था। एक बार पूना जाते समय संयोग से पेशवा बाजीराव के प्रतापी सेनापति मल्हार राव होलकर व उनके कुछ सहायकों ने इस शिव मंदिर में डेरा डाला। मंदिर में उन्होंने 8 वर्षीय अहिल्याबाई को पूजा करते देखा। अहिल्याबाई सुंदर या आकर्षक तो नहीं थीं, तथापि उनकी आँखों में गहराई, शांति, अपूर्व गंभीरता व तेज था। चारित्रिक सरलता, सौम्यता व विवेकपूर्ण नियंत्रित व्यवहार की वे धनी थीं। इतनी कम आयु में अहिल्याबाई की धर्म–परायणता, विनम्रता, शालीनता, सरलता, मर्यादा व प्रौढ़ता ने मल्हार राव को प्रभावित किया और उन्होंने अहिल्याबाई को अपने इकलौते पुत्र खंडे राव की पुत्र–वधु बनाने का संकल्प कर लिया। मल्हर राव का बेटा खंडे राव उनके समान पराक्रमी व तेजस्वी नहीं था। राज–काज में भी उसकी अधिक रुचि

* सहायक प्रबन्धक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

नहीं थी, इसलिए मल्हार राव ऐसी सुयोग्य पुत्र–वधु चाहते थे जो उनके बेटे को राज–काज संभालने की प्रेरणा दे और राज्य भी संभाले। 1733 में बड़ी धूम–धाम से खंडे राव के साथ अहिल्याबाई का विवाह हुआ।

मल्हार राव होलकर के पूर्वज महाराष्ट्र में वाफ गांव के मूल निवासी थे। कुछ समय पश्चात् उनके वंशज पूना के पास स्थित 'होल' नाम के गांव में बस गए। 'होल' के निवासी होने के कारण ही उनका उपनाम 'होलकर' पड़ गया था। मल्हार राव ने अत्यन्त गरीब व साधारण परिवार में जन्म लेकर अपने पराक्रम, पुरुषार्थ, सूझ–बूझ व साहस के बल पर अपनी जन्म भूमि से बहुत दूर व विषम परिस्थितियों में एक विशाल होलकर राज्य की स्थापना कर गौरवपूर्ण स्थान बनाया था। मल्हार राव होलकर पेशवा के सबसे शक्तिशाली, प्रभावशाली, स्वामीभक्त सरदार और विभिन्न कूटनीतिक दांव पेंचों के प्रमुख सूत्रधार थे। श्रेष्ठ योद्धा व घुड़सवार मल्हार राव तीर, तलवार व भाला चलाने में अत्यंत ही कुशल थे। पेशवा के सम्माननीय सहयोगी व महापराक्रमी सेनानी मल्हार राव होलकर का जीवन अधिकतर युद्ध क्षेत्रों में ही बीता था।

ससुराल में आते ही मात्र 9 वर्षीय बुद्धिमान व समझदार अहिल्याबाई अपने सद्‌गुणों, मधुर व्यवहार तथा सेवा से अपने सास–ससुर की बेहद प्रिय बन गईं। पूजा–पाठ, गृहकार्य एवं परिवार की सेवा यही अहिल्याबाई के प्रमुख कार्य थे। अहिल्याबाई ने अपने वीर, साहसी, स्वाभिमानी, महत्वाकांक्षी पति खंडे राव के साथ पूर्ण श्रद्धा व प्रेम से अपने धर्म का पालन किया, उनका आदर किया और सेवा व मधुर व्यवहार से उन्हें सदा प्रसन्न रखा। अहिल्या बाई के साथ खंडे राव के विवाह के दिन से मल्हार राव का वैभव, प्रभाव व राज्य का विस्तार भी बढ़ता ही गया। अहिल्याबाई के निर्मल स्नेह, सेवा व श्रेष्ठ जीवन के प्रभाव से स्वथच्छयन्दम स्वभावी खंडे राव के जीवन में सुखद परिवर्तन होने लगा। उनके स्वभाव में गंभीरता आ गई, वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो गए और राज–काज में भी रुचि लेने लगे। अहिल्याबाई की दो संतानें हुईं– एक पुत्र और दूसरी कन्या। पुत्र का नाम मालेराव व कन्या का नाम मुक्ता बाई था। भरे–पूरे परिवार में अहिल्याबाई के 9 वर्ष सुख और आनंद से बीते, परंतु उसके बाद उन पर एक के बाद एक दुःख आने लगे, तथापि उन दुःखों के बीच भी उन्होंने अपने कर्तव्यों का धैर्य और योग्यता के साथ पालन किया।

अहिल्याबाई के परम स्नेही व महान पथप्रदर्शक मल्हार राव ने अहिल्याबाई को राज–काज की दीक्षा दी। देश की स्थिति, राजनीति के व्यावहारिक सूत्र व दाँव–पेंच, युद्ध संबंधी जानकारी और राज्य शासन संबंधी बातें समय–समय पर अहिल्याबाई को बतायीं और धीरे–धीरे अहिल्याबाई पर शासन का भार भी डाला। अहिल्याबाई ने भी मल्हार राव के कहने पर न केवल सैन्य मामलों में, बल्कि प्रशासनिक मामलों में भी रुचि दिखाई, अपना भरपूर सहयोग दिया और प्रभावी तौर से उन मामलों को अंजाम दिया। अहिल्याबाई कई बार मल्हार राव के साथ युद्ध क्षेत्रों में भी गईं, जहाँ उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी व अदम्य साहस का परिचय दिया। मल्हार राव के आदेश से उन्होंने शासकीय व युद्ध संबंधी कार्यों के लिए कई यात्राएं भी कीं और देश की भौगोलिक, सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन किया। मल्हार राव की अनुपस्थिति में राज्य के सारे कार्यों का व्यवस्थित रीति से संचालन करने पर मल्हार राव, राज्य के अधिकारी व प्रजा भी उनसे पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट थे।

उन दिनों मराठों का बोलबाला था। पेशवा के नेतृत्व में वे अपने राज्य का विस्तार करते जा रहे थे। भारत के सभी राज्यों से वे 'चौथ' वसूल करते थे। भरतपुर के आस–पास जाटों का राज था। जाटों ने चौथ देने से इनकार कर दिया और लड़ने के लिए तैयार हो गए। पेशवा की आज्ञा से मल्हार राव ने अपने पुत्र खंडे राव के साथ जनवरी, 1754 में भरतपुर पर चढ़ाई कर दी। वे दिन तीर और तलवारों के थे और खंडे राव एक वीर सैनिक व अच्छे तलवारबाज थे। खंडे राव ने बचपन से ही मल्हार राव के साथ कई युद्धों में भी भाग लिया था। मल्हार राव ने दीग के पास सूरजमल जाट को कुंभेर दुर्ग में घेर लिया। मराठा सेना के साथ खंडे राव व अहिल्याबाई भी रणक्षेत्र में थे। दोनों पक्षों की ओर से कुछ महीनों तक रोज घोर युद्ध होता रहा। न जाटों ने हार मानी और न मल्हार राव पीछे हटे। मल्हार राव डटे हुए थे। शत्रु को मात दिए बिना रणक्षेत्र से हटना उनका स्वभाव नहीं था। 24 मार्च, 1754 को अपनी सेना का संचालन करते हुए युद्धभूमि में घूमते समय किले पर से चला एक गोला खंडे राव को लगा और उसी समय उनकी मृत्यु हो गई।

अहिल्याबाई को पति वियोग से अत्यंत दुःखी देख मल्हार राव ने अपना दुःख–दर्द भूल धैर्य बंधाया और पति के साथ सती हो जाने की प्रथा के विरुद्ध अपने बच्चों के लिए जीने के लिए प्रेरित किया और समझाया कि प्रजा की सेवा से बढ़कर पुण्य का काम कोई और नहीं है। अपने ससुर व गुरु मल्हार राव के कहने पर होलकर परिवार व राज्य का आधार स्तम्भ, समझदार व दूरदर्शी अहिल्याबाई ने सती प्रथा की सामाजिक रूढ़ि, लोक निंदा, मोक्ष प्राप्ति, कीर्ति आदि की परवाह न कर अपने छोटे–छोटे बच्चों, परिवार और सारी प्रजा के प्रति अपने नैतिक कर्तव्य व धर्म का पालन करना अधिक श्रेयस्कर समझा। अपने दुःखों को भूलकर ससुर मल्हार राव की आज्ञानुसार साम्राज्य संभाला और प्रजा के कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन अर्पित कर दिया।

तत्पश्चात् पुत्र की मृत्यु से दुःखी मल्हार राव का भी स्वर्गवास हो गया। पति के बाद ससुर की मृत्यु को भी अहिल्याबाई ने धैर्य से सहा। मल्हार राव की मृत्यु के बाद अहिल्याबाई का पुत्र मालेराव गद्दी पर बैठा। माले राव में होलकर राज्य के भावी राजपद के लिए आवश्यक गुणों का पूर्णतः अभाव था। वह उग्र व चंचल स्वभाव का था। प्रजा के साथ वह निर्दयतापूर्ण व्यवहार करता था। अहिल्याबाई को अपने वंश व कीर्ति का, कर्तव्य व राज्य के हितों का बहुत अधिक ख्याल था, पर माले राव ने अहिल्याबाई के महत्वपूर्ण आदेशों पर भी कोई ध्यान नहीं दिया। राज–काज की ओर उसका ध्यान ही नहीं था। 23 अगस्त, 1766 को माले राव का राजतिलक हुआ, परंतु पेशवा ने राज्य का वास्तविक अधिकार व प्रशासनिक कार्य अहिल्याबाई को ही सौंपा। इस तरह 1766 में अहिल्याबाई मालवा की शासक बन गईं और रानी अहिल्याबाई ने ही सारा राज–काज संभाला। सत्तासीन होने के कुछ दिनों बाद ही माले राव बीमार हो गया और नौ महीने के बाद केवल 22 साल की उम्र में उसका स्वर्गवास हो गया। अहिल्याबाई ने सब कुछ त्याग कर कहीं दूर जाने का विचार किया, लेकिन प्रजा के हित के लिए उन्होंने एक बार फिर अपने आपको संभाला और धीरज, साहस व विवेक का परिचय देते हुए जीवन के कठोर कर्मक्षेत्र में पुनः कार्यरत हुईं।

पेशवा की राय से अहिल्याबाई ने गंगाधर राव को अपना मंत्री बनाया और राज–काज शुरु किया। स्वार्थी, छली व कुटिल गंगाधर राव अहिल्याबाई की मानसिक तनावपूर्ण स्थिति का फायदा उठाना चाहता था। वह चाहता था कि अहिल्याबाई किसी बालक को गोद ले ले और राज–काज उस पर छोड़ कर भगवत भजन करे। अहिल्याबाई को यह मंजूर नहीं था। अहिल्याबाई योग्य व्यक्ति को ही राज–काज सौंपना चाहती थीं। राज्य हड़प लेने के अपने कुटिल विचार के चलते गंगाधर राव ने पेशवा के चाचा रघुनाथ राव को अपने साथ मिला लिया। यह देख अहिल्याबाई ने अपनी सेना के अफसरों और हर गांव के मुखिया को बुलाकर एक बड़ा दरबार लगाकर विचार–विमर्श किया। सबकी राय थी कि अहिल्याबाई का ही राज–काज देखना ठीक है और यदि रघुनाथ राव आए तो उससे लड़ा जाए। इसे मद्देनजर रखते हुए अदम्य साहसी अहिल्याबाई ने अपने नेतृत्व में महिलाओं की एक विशाल सेना तैयार की। महिलाओं को सभी प्रशिक्षण दिए और युद्ध कौशल भी सिखाया, किंतु वे जानती थीं कि पेशवा की विशाल सेना के आगे उनकी सेना कमजोर है इसलिए उन्होंने पेशवा को एक पत्र लिखा कि यदि वे महिलाओं की सेना से जीत प्राप्त कर भी लेंगें तो क्या इसे बहादुरी समझा जाएगा? लोग आपको धूर्त समझेंगे और संसार यही समझेगा कि आप बस महिलाओं की सेना से ही तो जीते हैं, किंतु अगर आप हमसे हार गए तो आपका कितना अपमान होगा क्या आपने सोचा? यह पत्र पढ़ने के बाद पेशवा पर गहरा असर पड़ा और उसने युद्ध का विचार बदल दिया। उस समय अहिल्याबाई का सेनापति तुकोजी राव होलकर था, जिसकी राजसी सेना का उन्हें पूरा सहयोग मिला था, जिसके साथ अहिल्याबाई ने कई युद्धों का नेतृत्व भी किया था और कई युद्ध जीते भी थे। तुकोजी राव फौज लेकर क्षिप्रा नदी के किनारे डट गया, लेकिन रघुनाथ राव लड़ने नहीं आया। इस तरह अहिल्याबाई की चतुराई से रधुनाथ राव की बला टल गई।

रघुनाथ राव की बला टलने के बाद राज्य पर दूसरी बला आ गई। गांव–गांव और नगर–नगर में चोर–डाकू प्रजा को त्रस्त करने लगे। अहिल्याबाई ने फिर एक दरबार बुलाकर प्रस्ताव रखा कि डाकुओं से प्रजा को कैसे बचाया जाए? शासकीय मामलों के अधिकारियों को कोई कारगर उपाय न सूझने पर उपद्रव करने वाले डाकू–लुटेरों को काबू करने और प्रजा को निर्भयता और शांति प्रदान करने के अपने कर्तव्य के

चलते अहिल्याबाई ने इसे एक नई दिशा देते हुए यह घोषणा की कि मेरे राज्य का जो आदमी लुटेरों का दमन करेगा उसके साथ मैं अपनी पुत्री मुक्ताबाई का ब्याह कर दूँगी। तब एक मराठा नवयुवक यशवंतराव फणशे उठा। उसने कहा कि सेना और धन से मेरी मदद की जाए तो मैं लुटेरों का सफाया कर दूँगा। अहिल्याबाई ने यह मांग स्वीकार कर ली। 2 वर्षों में उसने स्थिति सुधार दी और अहिल्याबाई ने अपने वायदे के अनुसार अपनी पुत्री मुक्ताबाई का उसके साथ विवाह कर दिया। असामाजिक तत्वों पर अंकुश लगाकर उनके पुनर्वास की व्यवस्था की, इससे इंदौर राज्य में चोरी और डाके का डर जाता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि दूसरे राज्यों से सेठ, साहूकार और व्यापारी इंदौर में आ–आकर बसने लगे। इंदौर एक बड़ा नगर हो गया और इस नगर में व्यापार की बड़ी उन्नति हुई। राज्य की प्रजा सुख–शांति से रहने लगी।

पति, ससुर और पुत्र की मृत्यु अहिल्याबाई की नज़रों के सामने हुई। पुत्री मुक्ताबाई के 16 वर्षीय अति प्रिय पुत्र का भी देहांत हो गया। साल भर बाद पुत्री मुक्ता बाई के पति का भी स्वर्गवास हो गया। पुत्र और पति की मृत्यु से विचलित हो मुक्ताबाई अपने पति के साथ सती हो गई। परिवार के सभी सदस्य उनके सामने स्वर्ग सिधार गए, पर प्रियजनों का वियोग शोक भी अहिल्या बाई को अपने कर्तव्य पथ से विचलित नहीं कर सका। अहिल्याबाई के जीवन का यही लक्ष्य रहा– प्रजा का हित, राष्ट्र की रक्षा और उसकी प्रगति। शिव भक्त अहिल्या बाई ने अपना सारा जीवन वैराग्य, कर्तव्य पालन और परमार्थ साधना में अर्पण कर दिया। उन्होंने अपने कर्तव्यों का धैर्य और योग्यता के साथ पालन किया और हर दुःख, संकट व चुनौती का पूरी आत्मिक शक्ति, साहस व तेजस्विता के साथ सामना किया।

अहिल्याबाई ने जीवनभर धर्म और नैतिकता के आधार पर राज किया। वेदों और पुराणों के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात किया। स्वयं को प्रजा का सेवक मान अपना सारा जीवन प्रजा की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। पड़ोसी राज्यों के साथ शांति, न्याय, समता व मैत्री का व्यवहार उनकी विदेश नीति के प्राथमिक सिद्धांत रहे। पड़ोसी राज्यों में प्रशासकीय कठिनाई या कोई समस्या उत्पन्न होने पर उसे हल करने के लिए भी वे सदा तत्पर रहती थीं। उनकी राजनीतिक पवित्रता का ही परिणाम था कि किसी भी राज्य ने होलकर राज्य पर कभी आक्रमण नहीं किया। यहाँ तक कि उदयपुर के नरेश टीपू निजाम भी अहिल्याबाई के विरुद्ध कभी नहीं हुए। राष्ट्रहित में पूर्णतः समर्पित अहिल्याबाई ने धर्म को राजनीति से जोड़ कर एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया और दुनिया को दिखा दिया कि शस्त्रबल से सिर्फ दुनिया जीती जा सकती है, लेकिन प्रेम और धर्म से लोगों के दिलों पर राज किया जा सकता है।

अहिल्याबाई ने उस भीषण अराजकतापूर्ण युग में भी विभिन्न कलाओं व कलाकारों को संरक्षण व नवजीवन प्रदान कर अनेक महान कार्य किए। धर्मशास्त्र, कर्मकांड, वेदांत, साहित्य, व्याकरण, पूजन, कीर्तन, ज्योतिष आदि विधाओं के माने हुए पंडितों को देशभर से निमंत्रित कर उन्हें महेश्वर में बसाया। उनकी संपूर्ण व्यवस्था राज्य की ओर से की। विद्वानों, पुजारियों, लेखकों, कवियों, हरिकथा गायकों व कीर्तनकारों को समय–समय पर यथोचित सम्मान दिया, उनकी प्रतिष्ठा की व संरक्षण दिया। काशी में ब्रह्मपुरी नाम का एक मोहल्ला बसाया। वहाँ सरल जीवन व उच्च विचारों वाले धर्म शास्त्रों के ज्ञाता विद्वान ब्राह्मणों को देश भर से आमंत्रित कर बसाया। यहीं से आगे चल कर अनेक श्रेष्ठ प्रतिभाओं व धार्मिक ग्रंथों का निर्माण हुआ।

महान कर्मयोगिनी अहिल्याबाई का संपूर्ण जीवन प्रचार, प्रभाव व कीर्ति से परे निष्काम सेवा, त्याग व दान–धर्म के कार्यों से भरपूर था। स्नेहमयी व दयालु अहिल्याबाई के अंतःकरण में सबके लिए समान स्थान था और उनका सेवा कार्य पूरे देश व समूची मानवता के लिए था। महिला सशक्तिकरण की पक्षधर अहिल्याबाई ने इतिहास के उस दौर में, जब स्त्री शक्ति का स्थान समाज में गौण था, स्त्री कल्याण के अंतर्गत कई कार्य किए और स्त्रियों को उनका उचित स्थान दिया। स्त्री शिक्षा का विस्तार किया। पति की मृत्यु के बाद सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कोई नहीं होने पर उस सम्पत्ति को राजकोष में जमा कर लेने के कानून को समाप्त कर अहिल्याबाई ने मृतक की विधवा को उस सम्पत्ति को सुपुर्द करने का कानून बनाया। अहिल्याबाई ने निःसंतान को बच्चे गोद लेने का कानून भी लागू किया। स्त्रियों के मान–सम्मान का ध्यान रखते हुए नदियों पर बनवाए गए घाट स्थान में महिलाओं के लिए अलग व्यवस्था

करवायी। अहिल्या बाई ने समाज व्यवस्था, राजकाज व न्याय व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण सुधार किए। प्रजा का पालन संतान की तरह करना राजधर्म मानने वाली लोकमाता अहिल्या देवी ने राज्य की प्रजा को सुखी व संतुष्ट रखने का पूरा–पूरा ध्यान रखा। उनके सामाजिक व राजकीय कार्यों से प्रजा संतुष्ट थी और उनका शासन पूर्णतः शांतिपूर्ण था।

अहिल्याबाई किसी बड़े राज्य की रानी नहीं थी, बल्कि एक छोटे–से भू–भाग मालवा पर उनका राज था और उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था, इसके बावजूद जन–कल्याण के लिए उन्होंने कई चिरस्मरणीय कार्य किए। इंदौर को एक छोटे–से गांव से समृद्ध एवं सजीव शहर बनाने में अहम भूमिका निभायी। उन्होंने अपने राज्य में प्रजा की सुविधा के लिए पुनः निर्माण करने का महान कार्य सम्पन्न किया। सारे राज्य में कई बड़ी–बड़ी सड़कें, पुल, घाट, जलाशय, असंख्य छोटी नहरें, बावड़ियाँ आदि बनवाए। राज्य भर में जगह–जगह पर प्याऊ बनवाए। कलकत्ता से काशी तक के मार्ग को सुधरवाया। काशी, गया, सोमनाथ, अयोध्या, मथुरा, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, जगन्नाथपुरी इत्यादि प्रसिद्ध स्थानों पर विशाल मंदिर बनवाए, धर्मशालाएं खुलवायीं। मुसलमान शासकों द्वारा नष्ट कर दिए गए मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, टूटे मंदिरों के स्थांन पर नए मंदिरों का निर्माण कराया, तीर्थ स्थानों को पुनः प्रतिष्ठा प्रदान की, संस्कृत व संस्कृति को आश्रय दिया और भारतीय शिल्पियों व कला कौशल को सब तरह का सहयोग दिया। अहिल्याबाई ने इस प्रकार एक बड़ी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति की और समूची मानवता को शाश्वत सुख–शांति की अनुपम भेंट दी। अहिल्या बाई द्वारा बनवाए गए सारे निर्माण कार्य अलौकिक, अतुलनीय, अत्यंत सुंदर, भव्य, सुदृढ़, दर्शनीय, स्मरणीय तो है ही, आज भी भारत की वास्तुकला के श्रेष्ठ व अनुपम उदाहरण भी हैं।

देश की महान विभूति अहिल्याबाई ने 13 अगस्त, 1795 को अपने प्राण त्यागे। अहिल्याबाई ने समूची मानवता को धर्म, आंतरिक पवित्रता व शाश्वत सुख–शांति की अनुपम भेंट दी। उनके बाद उनका सेनापति तुकोजीराव होलकर, जो राज–काज में अंत तक उनका सहयोगी था, इंदौर की गद्दी पर बैठा। तुकोजीराव ने अहिल्याबाई की मूर्तियाँ बनवायीं और इन्हें इंदौर, प्रयाग, नासिक, गया, अयोध्या और महेश्वर के मंदिरों में रखवाया। यशवंतराव होलकर ने महेश्वर में अहिल्याबाई की छतरी बनवायी। 34 वर्षों में बनी यह छतरी मध्य भारत का ताजमहल कहलाती है। अहिल्याबाई की महानता और सम्मान में भारत सरकार ने 25 अगस्त, 1966 को उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। इंदौर के नागरिकों ने 1996 में अहिल्याबाई के नाम से एक पुरस्कार शुरू किया, जो असाधारण कृतित्व के लिए दिया जाता है। एक छोटे से गांव के साधारण परिवार में जन्म ले एक विशाल राज्य की सर्वेसर्वा बनी अहिल्याबाई को बुद्धिमानी, तीक्ष्ण सोच और स्वतःस्फूर्त शासक के रूप में राष्ट्र निर्माण व विकास में अद्‌भुत और अतुलनीय योगदान के लिए सदा स्मरण किया जाता रहेगा। ❑

बात पते की

'सत्यम शिवम सुन्दरम्' वाक्य प्रायः सुना जाता है पर इसका शाब्दिक अर्थ चन्द लोग ही समझ पाते हैं। इसमें प्रयुक्त शब्द के साथ–साथ वाक्य भी कर्ण प्रिय लगते हैं, पर आम लोग इसके अर्थ की गहराई से शायद ही वाकिफ होते हैं।

सत्यम् का अर्थ है– सत्य, शिवम् का अर्थ है– शिव और शिव का तात्पर्य है शाश्वत (हमेशा, अनश्वर) सुन्दरम् का मतलब है– सुन्दरता से।

अर्थात् जो सत्य है वही शिव (शाश्वत है, अनश्वर है, कभी भी नष्ट न होने वाला) है एवं जो शिव है, वही सुन्दर है। अतः सत्य ही सुन्दर है।

तात्पर्य यह है कि संसार में प्रकृति प्रदत्त पंचतत्व के सिवा कुछ भी सुन्दर नहीं है, कारण सब नश्वर है। फिर भी प्राणी इस छोटे से मूल मन्त्र को ना समझने की भूल कर नश्वर कार्यों में अपने बहुमूल्य जीवन का समय नष्ट करता है।

विविध सेवाकालीन हिन्दी प्रशिक्षण

एस.पी.तिवारी*

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक प्रकार के सेवाकालीन प्रशिक्षणों की व्यवस्था की गई है, जिसके लिए नाममात्र का प्रशिक्षण शुल्क लेकर अल्पकालीन व दीर्घकालीन प्रशिक्षण दिए जाते हैं जिनमें प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि आदि शामिल हैं।

केन्द्र सरकार, केन्द्र सरकार के उपक्रमों, बैंकों व अन्य स्थानीय निकायों के लिए राजभाषा विभाग 05 या 10 दिन के हिंदी टंकण प्रशिक्षण के बाद अपने–अपने कार्यालयों में अभ्यास करके परीक्षा में बैठने की सुविधा प्रदान करता है।

कार्यालय के कार्य को बिना हिचक हिन्दी में करने के लिए कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए राजभाषा विभाग द्वारा पारंगत प्रशिक्षण का कार्यक्रम तैयार करके उन्हें एक निश्चित अवधि में कार्यालय के सभी प्रकार के कार्यों को करने का प्रशिक्षण देकर उन्हे प्रवीण करने का सराहनीय कार्यक्रम तैयार किया है, जिसका अच्छा परिणाम मिल रहा है।

राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा दिए जा रहे विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों की संक्षिप्त जानकारी निम्न प्रकार हैं :–

1. प्रबोध

हिंदी भाषा ज्ञान के लिए यह प्रारंभिक स्तर का प्रशिक्षण है। वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें प्राइमरी स्तर तक का हिंदी का ज्ञान नहीं है। वे प्रबोध प्रशिक्षण के पात्र है। वे कार्मिक जिन्हें कार्यालय में टिप्पण–आलेख, या पत्र व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं होती (जैसे स्टाफ कार ड्राइवर, ऑपरेटर, चौकीदार आदि इनके लिए केवल प्रबोध प्रशिक्षण अंतिम अनिवार्य प्रशिक्षण है। प्रबोध प्रशिक्षण कन्नड़, तमिल, मलयालम, तेलुगू, अंग्रेजी, मणिपुरी, मिजो भाषा–भाषी अधिकारी/कर्मचारी प्राप्त कर सकते हैं।

2. प्रवीण

हिंदी भाषा ज्ञान के लिए यह माध्यमिक स्तर का प्रशिक्षण है। वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें मिडिल स्तर तक का हिन्दी का ज्ञान नहीं है। वे प्रवीण प्रशिक्षण के पात्र हैं। वे कार्मिक जिन्हें स्वयं कोई सचिवालयी कार्य करने की आवश्यकता नहीं होती लेकिन हिंदी में पत्र व्यवहार, रिपोर्ट आदि बनाने का ज्ञान आवश्यक हो जैसे वैज्ञानिक, डॉक्टर, नर्स, प्रयोगशाला/वर्कशॉप के सुपरवाइजर आदि–इनके लिए केवल प्रवीण प्रशिक्षण अंतिम अनिवार्य प्रशिक्षण है। प्रवीण प्रशिक्षण मराठी, सिंधी, मैथिली, संथाली, बोडो, डोगरी, नेपाली, गुजराती, बंगला, असमिया और उड़िया भाषा–भाषी अधिकारी/कर्मचारी प्राप्त कर सकते हैं।

3. प्राज्ञ

हिन्दी भाषा ज्ञान के लिए यह मैट्रिक स्तर का प्रशिक्षण है। वे सभी अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें मैट्रिक स्तर का हिन्दी का ज्ञान नहीं है। वे प्राज्ञ प्रशिक्षण के पात्र हैं। वे कार्मिक जिन्हें कार्यालय में सचिवालयीय, हिन्दी में टिप्पण–आलेखन, पत्र व्यवहार करना पड़ता है उन्हें प्राज्ञ प्रशिक्षण अंतिम अनिवार्य प्रशिक्षण है। प्राज्ञ प्रशिक्षण पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी भाषा–भाषी अधिकारी/कर्मचारी प्राप्त कर सकते हैं।

4. पारंगत

कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है अर्थात मैट्रिक परीक्षा

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी एक विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है। वे पारंगत प्रशिक्षण के लिए पात्र हैं। इस प्रशिक्षण के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार राजभाषा विभाग, केंद्र सरकार के विचाराधीन है।

5. हिन्दी टंकण

हिन्दी टंकण प्रशिक्षण गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा 6 माह का दीर्घकालिक प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। इसमें कार्यालय के अंग्रेजी टंकक/अवर श्रेणी लिपिक अथवा इसी प्रकृति का कार्य करने वाले भिन्न पदनाम/भिन्न वेतनमान वाले कार्मिक प्रशिक्षण के पात्र हैं जिन्होंने पहले कभी हिन्दी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया। इनके लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है। इससे उच्च पदनाम/वेतनमान वाले अधिकारी/कर्मचारी स्वैच्छिक आधार पर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है किंतु वे सरकार द्वारा दिए जा रहे किसी भी प्रोत्साहन पुरस्कार के पात्र नहीं होंगे।

6. हिन्दी आशुलिपि

अंग्रेजी के आशुलिपिक जिन्हें हिन्दी आशुलिपि का ज्ञान नहीं है, उन्हें सेवा में आने के बाद हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है। यह प्रशिक्षण भी हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा दिलाया जाता है जो राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत है। इन सेवाकालीन प्रशिक्षणों के लिए हिन्दी शिक्षण योजना के स्थानीय निदेशक/उपनिदेशक/सहायक निदेशकों द्वारा केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों के साथ परस्पर पत्राचार होता रहता है।

परीक्षा शुल्क: – केंद्र सरकार व उसके उपक्रमों, निगमों, बैंकों आदि के नियमित एवं प्राइवेट रूप से परीक्षा देने वाले कर्मचारीयों के लिए हिंदी प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षा के लिए परीक्षा शुल्क 100/– रु. संबंधित संस्थान द्वारा जमा किया जाता है। पारंगत प्रशिक्षण के लिए कोई शुल्क नहीं है।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में केंद्र सरकार, केंद्र सरकार के उपक्रमों, निगमों, निकायों, बैकों आदि के उन अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के लिए आयोजित किया जाता है, जिनके लिए यह अनिवार्य है।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पास कर लेने पर सरकार/विभाग द्वारा निर्धारित दिशा–निर्देशों, मापदंडों के अनुसार प्रोत्साहन के रूप में नकद राशि/वेतनवृद्धि प्रदान की जाती है। सरकार द्वारा वर्ष 2025 तक इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। हमें निश्चित रूप से इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ उठाना चाहिए। ❑

मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

मीनाक्षी गुप्ता*

मैं हिंदी मैं एक नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

मात्रा के शृंगारों से सजी
व्याकरण मेरे केश में रची
अलंकार मेरा अंग बसा
संज्ञा सर्वनाम रोम–रोम बसा
मैं हिंदी मैं एक नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ, मैं नारी हूँ

व्याख्या मेरी अति सरल
मन मेरा भाषा सा कोमल
जीवन मेरा सालों में सधा
है प्रेम प्यार से पला बढ़ा
मैं हिंदी मैं एक नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

भगवत चरणों में से उठकर
पहुंची हूँ मैं सर्वजन तक
ऋषियों मुनियों ने जाना मुझे
जग में मेरा सम्मान बढ़ा
मैं हिंदी मैं एक नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

जन–जन में खोता मेरा मान
हूँ रही कहाँ अब मैं महान
भूल रहा है मुझे हिंदुस्तान
अब कहाँ मेरा स्वाभिमान रहा
मैं हिंदी मैं एक नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

निज भाषा से कम हुई
शरमाई जिह्वा जब नाम कहा
विदेशी नार ने मान चुरा
किया धूमिल है अभिमान सदा
हाँ मैं हिंदी मैं नारी हूँ
मैं हिंदी हूँ मैं नारी हूँ

* प्रधान निजी सचिव, डब्ल्यूडीआरए, नई दिल्ली

मन के हारे हार है मन के जीते जीत

देवकी वी. चतुरानी*

यह प्रस्तुत लेख 'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत' स्वयं के अनुभवों पर आधारित है। हर व्यक्ति के अपने कुछ सपने होते हैं, कोई बड़ा लक्ष्य होता है जिसे प्राप्त करने के लिए उसे दिन–रात मेहनत करनी पड़ती है और इस सफर में उसे कई असफलताएं, रुकावटें एवं कई मुसीबतों से होकर गुजरना पड़ता है और अंततः उसे अपनी मंजिल एवं लक्ष्य हासिल हो ही जाता है। इसलिए हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए क्योंकि किसी ने सही कहा है कि – कई लोग मुश्किलों में टूट जाते हैं तो कई लोग उन्हीं मुश्किलों में रिकार्ड तोड़ देते हैं।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जिस तरह दिन बदलते हैं, समय बदलता है और मौसम बदलते हैं, उसी तरह मनुष्य की प्रवत्ति भी परिवतनशील है। जैसे एक छोटा बच्चा देखते ही देखते बड़ा हो जाता है, फिर बूढ़ा और फिर शून्य जिन पांच तत्वों से इन्सान बना उसी में विलीन हो जाता है। उस विलींकरण तक आते–आते बचपन और बुढ़ापे के बीच का जो समय है उसमें इन्सान चाहे तो विश्व–विजेता बन सकता है या अन्धकार के गर्त में विलीन हो सकता है।

मनुष्य जीवन परिवर्तनशील है तथा सुख–दुःख, आशा और निराशा दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं किन्तु मनुष्य कुदरत की तरह परिवर्तन ला सकता है। कब? जब उसका मन मजबूत हो, इसलिए यह कहावत शत–प्रतिशत सही है कि "मन के हारे हार है और मन के जीते जीत"। वह मनुष्य जिसने अपने मन को जीता वह जग जीत सकता है, ऐसा कहना बिल्कुल भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। अगर मनुष्य जीत चाहता है तो उसे अपने मन को सबसे पहले जीतना होगा। सशक्त मन वाले व्यक्तियों की जिन्दगी में कितनी भी तकलीफें आएं, कितनी भी असफलताएं आयें और राह में कितने भी कांटे बिछें लेकिन अपनी आस्था, विश्वास एवं बुद्धि का उपयोग करके वह सफलता के शिखर तक पहुँच ही जाता है। यह कहावत सही है कि जग जीतना है तो मन को जीतना ही पड़ेगा क्योंकि बिना कष्ट सहे और विपरीत परिस्थितियों का सामना किए बिना किसी को भी मंजिल हासिल नहीं होती। सुख और दुःख ऊपर वाले के द्वारा बनाई गई ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें मनुष्य के आत्मविश्वास एवं काबिलियत को परखा जाता है। इसका जीता जागता उदाहरण हम चीटियों से सीख सकते हैं जो दीवारों पर कई बार चढ़ती, कितनी बार गिरती हैं पर हार नहीं मानती, गिरते–फिसलते आखिरकर वो अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच ही जाती है, फिर हम तो इन्सान हैं, क्यों हार मानें जब एक छोटी–सी चींटी भी अपनी हार नहीं मानती तो हम तो बुद्धिजीवी इन्सान हैं अपनी हार कैसे मान लें। यहाँ पर प्रसिद्ध कवि हरिवंशराय बच्चन जी की कविता की दो पंक्तियां कहना अत्यंत उचित प्रतीत होता है –

"नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दिवारों पर सौ बार फिसलती है।
मनका विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
मेहनत उसकी बेकार हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

उपर्युक्त पंक्तियां निश्चित ही हमारे अन्दर एक जोश एवं जुनून पैदा करती हैं। जैसे पहाड़ों से नदियाँ कल–कल ध्वनि करते हुए निरंतर बहती रहती हैं और वे रास्ते में किसी से समुद्र का पता नहीं पूछती हैं और अपने मस्त संगीत में लीन होकर रास्ते में चाहे कितने भी रुकावटें क्यों न आएं, उनसे अनजान होकर अंत में समुद्र में समाहित हो जाती हैं क्योंकि वह अपने प्रीतम से मिलने की आस में अपने रास्तों की रुकावटों से

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

बेखबर अपनी ही धुन में निरंतर चलती चली गई तभी उसे अपना लक्ष्य हासिल हो सका।

विषम परिस्थितियाँ सभी के जीवन में आती हैं और आनी भी चाहिए। उनसे घबरा कर हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, तभी हम अपने लक्ष्य को हासिल कर पाएंगे। एक सफल व्यक्ति बनने के लिए और अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए इंसान को अच्छे और बुरे दोनों अनुभवों से होकर गुजरना पड़ता है और जो मज़बूत एवं सशक्त मन का इन्सान होता है वह अपने सपनों को निश्चित ही साकार करता है और उसे अपना लक्ष्य हासिल होता है। मनुष्य का मन अनंत शक्तियों का भंडार है। सकारात्मक सोच इन्सान को सफलताओं के शिखर तक पहुँचाती है और नकारात्मक विचार नीचे की तरफ धकेलते हैं।

किसी ने सच कहा है कि "छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता। टूटे और कमज़ोर मन से कोई खड़ा नहीं होता।"

किसी भी प्रकार के कार्य को करने के लिए एक रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए उसके लिए एक दृढ़ मनोबल होना चाहिए तथा दृढ़ मनोबल के लिए चिंतन मनन और ध्यान करना ज़रूरी है और दृढ़ता के साथ किये गए कार्य को करने के लिए ईश्वर भी साथ देता है, लेकिन एक हारे हुए व्यक्ति को संसार में न किसी इन्सान का साथ मिलता है और न ही ईश्वर उसका साथ देता है। मन से हारा हुआ व्यक्ति घर में, समाज में और अपने आस–पास नकारात्मक विचारों को फैलाकर एक कुंठित समाज का निर्माण करता है।

इतिहास इस बात का गवाह है कि किसी भी इन्सान ने बिना किसी तकलीफ और कष्टों को सहे अपनी मंजिल हासिल नहीं की जैसे अम्बानी परिवार, टाटा, बिरला इन लोगों ने अपने जीवन में निरंतर प्रयास करके ही यह मुकाम हासिल किया है। यह भी सच है कि जो सफ़र की शुरुआत करते हैं, वे मंजिल को प्राप्त कर ही लेते हैं क्योंकि मज़बूत मनोबल वाले इंसानों का तो रास्ते भी इंतजार करते हैं।

किसी ने सच कहा है कि– हजारों तकलीफें और उलझने राहों में हों और कोशिशें हो बेहिसाब, इसी का नाम जिंदगी है चलते रहिये जनाब। इन्सान का मन ही सभी इच्छाओं को स्वामी और इन्द्रियों का नियामक है। विपरीत परिस्थियों में मन पर नियंत्रण करके और सकारात्मक सोच द्वारा सफलता के लक्ष्य को पा सकते हैं इसलिए मन पर नियंत्रण और दृढ़ता होना ज़रूरी है, क्योंकि –

"मन ही मन को जानता, मन की मन से प्रीत।
मन ही मनमानी करे, मन ही मन का मीत।
मन झूमे बावरा, मन की अद्भुत रीत।
करता चल पुरुषार्थ तू, काहे हो भयभीत।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"।

❑

हर आंकड़ा शुभ आंकड़ा

प्रो. बलवन्त रंगीला*

"एक" ईश्वर करे सपने साकार अनेक
"दो" से दूर होती मुसीबतें आती जो
तीन तो है त्रिदेव कृपा से नित्य नवीन
चार बनाता दुश्मन को भी सच्चा यार
पांच से कभी न आए सांच को आंच
छः देता सदा शुभ संकेतों की छटा
सात पर होती मनचाही खुशियों की बरसात
आठ से होते एक से एक निराले ठाठ
नौ बराबर सौ, नौ के शुभ का हर जोड़ नौ
दस करता जीवन की सभी मुश्किलें वश
एक से दस तक आंकड़ों से बने आंकड़े शेष
रंगीला छोटे बड़े सभी आंकड़े करते सुखी हमेशा

▲▲▲

सभी वार शुभ वार

सोमवार है सबसे उत्तम वार
मंगल मुखी करता सदा सुखी
बुध से होता प्रत्येक कार्य शुद्ध
गुरुवार को करो कड़े काम शुरू
शुक्रवार करे सबका बेड़ा पार
शनिवार सबका प्यारा धनीवार
रविवार की हमेशा अद्भुत छवि
प्रत्येक वार की है महिमा अपार
'रंगीला' सप्ताह का हर वार शुभ वार

* फ्लैट नं. 622, ग्रीन हैवन अपार्टमेंट, द्वारका, नई दिल्ली

''मेरा लक्ष्य–भ्रष्टाचार मुक्त भारत''

प्रसून कुमार झा*

भ्रष्टाचार दो शब्दों से मिलकर बना है भ्रष्ट एवं आचार, अर्थात यह आचरण जो उचित न हो तथा जिसमें कोई दोष हो। कोई भी आचरण किसी विचार का ही फल होता है तथा भ्रष्ट विचार केवल भ्रष्ट आचरण को जन्म देता है। ध्यानस्थ हो कि भ्रष्टाचार का आंग्ल रूपान्तर "करप्शन" के मूल लैटिन शब्द का एक अर्थ नैतिक ह्रास भी है।

भारत एक महान राष्ट्र है। भारत एक अमीर राष्ट्र है किंतु यहां के लोग गरीब हैं क्योंकि इंसान की मानसिकता जैसी होती है वो वैसा ही हो जाता है। आज भारत में भ्रष्टाचार ऐसी समस्या बन चुकी है कि इसके खिलाफ युद्ध, एक जंग की जरूरत है, सभी को एक साथ आने की जरूरत है।

भ्रष्टाचार एक ऐसी दीमक है, जो समृद्ध से समृद्ध देश को गरीब और खोखला बना देता है। भ्रष्टाचार की शुरूआत मनुष्य के लालच से शुरू हुई और अब भारत में इसके बड़े–बड़े उदाहरण देखने को मिलते हैं। आज हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त है, लोग अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने और अधिक धन कमाने के लालच में अपने कर्तव्यों को भूलकर देश एवं देशवासियों को परवाह न कर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। भारत में कालाधन स्वतंत्रता के बाद से ही एक गंभीर समस्या बना हुआ है।

भ्रष्टाचार ही है जो देश के विकास और अर्थव्यवस्था में बाधक होता है। व्यापारी धन कमाने के लिए मुनाफाखोरी व जमाखोरी अपनाते हैं, जिससे मंहगाई बढ़ती है और देश का विकास धीमा होता है तथा अर्थव्यवस्था अवरुद्ध होती है। सरकारी कर्मचारी अधिक पैसा कमाने के लालच में अनुचित तरीके अपनाते हैं अपने कर्तव्य का निर्वाह न कर अपने ज़मीर को बेच देते हैं। भ्रष्टाचार ने अपनी मजबूत जड़ें, इस तरह फैलाई हैं कि इसको कम करना नामुमकिन–सा लगता है। किंतु गहन चितवृति, आत्मबल एवं समय का उपयोग करते हुए आने वाली पीढ़ियों को सही–सही संस्कार व ज्ञान देकर भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लक्ष्य के सपने को साकार कर सकते हैं।

कानून व्यवस्था एवं दबाब – कर्मचारियों की आलसी प्रवृति और कानून व्यवस्था का कोई भय नहीं होने के कारण जनता के कार्यों को विलम्ब से किया जाता है इसलिए लोग अपना काम निकलवाने के लिए भ्रष्टाचार का तरीका अपनाते हैं। कर्मचारियों का लालच बढ़ता जाता है क्योंकि उन्हें वेतन तो सरकार से मिलता ही है। उनकी लालची प्रवृति की वजह से वो ज्यादा कमाने को व्यापार बना लेते हैं। भ्रष्ट नेताओं की वजह से भ्रष्टाचार को अत्यधिक बढ़ावा मिला है। ये अपना दबदबा बनाये रखने के लिए ईमानदारी से कार्य करने वाले कर्मचारियों पर गलत तरीके से कार्य करने का दबाब बनाते हैं। वे अपने रिश्तेदारों और मित्रगण का कार्य गलत तरीके से करवाते हैं। अतः भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने के लिए कानून व्यवस्था मजबूत करने की जरूरत है।

आय का असमान वितरण – भारत बहुत बड़ा देश है और यहां आय का इतना असमान वितरण है कि जिसकी कल्पना भी भयावह है। पैसे वाले लोग समान्य लोगों की तरह कतार में खड़े रहकर कार्य करवाना पसंद नहीं करते वो अपने पैसे के दम पर कार्य करवाते हैं और आम जनता का कार्य लटका रहता है। निष्कर्ष यही है कि मेरा लक्ष्य–भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने के लिये आय का असमान वितरण में संशोधन करने की जरूरत है।

वसूली का अधिकार – 'राईट टू रिकवर' यानि हमारे देश में कई घोटाले हुए और भ्रष्टाचारियों को सजा भी हुई और वो भ्रष्ट लोग बाहर भी आ गये लेकिन जो धन उन्होंने लूटा उसका क्या हुआ? जैसे हमारे देश में 'राइट टू रिजेक्ट' कि मांग उठी वैसे ही अब 'राईट टू रिकवर' कानून लागू हो और वह, उसके रिश्तेदार माता–पिता–संतान आदि की

* सहायक (राजभाषा), सेल, नई दिल्ली

सम्पति से भी वसूल करने का प्रावधान हो। इस तरह के अधिकार से 'मेरा लक्ष्य–भ्रष्टाचार मुक्त भारत' की कल्पना कर सकते हैं।

शिक्षा तंत्र में सुधार – सबसे महत्वपूर्ण है देश का शिक्षा–तंत्र क्योंकि अगर शिक्षातंत्र में ही भ्रष्टाचार रहा तो देश से भ्रष्टाचार मिटाने की सोचना भी बेमानी है। जहाँ हम शिक्षा प्राप्त करते हैं वो विद्या का मंदिर होता है। भारत में भ्रष्टाचार की शुरूआत यहीं से हो रही है। शिक्षा तंत्र में सुधार कर भ्रष्टाचार मुक्त भारत की कल्पना कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने के लिए वर्तमान सरकार द्वारा उपाय

1. विमुद्रीकरण (नोट बंदी)

जब सरकार पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद करके नई मुद्रा लाने की घोषणा करती है तो इसे विमुद्रीकरण कहते हैं। भारत में पहली बार वर्ष 1946 में, दूसरी बार जनवरी 1978 एवं वर्तमान सरकार द्वारा 08 नवम्बर, 2016 को विमुद्रीकरण की घोषणा की गई। नोटबंदी के कारण कालाधन, टैक्स चोरी पर अंकुश लगाकर सरकार ने भ्रष्टाचार को भारत में कम करने का प्रयास किया है।

2. जीएसटी

जीएसटी का हिन्दी शाब्दिक अर्थ है– वस्तु एवं सेवा कर। अब पूरे भारत में एक ही प्रकार से अप्रत्यक्ष कर देना होगा। जीएसटी लागू होने से हर सामान एवं हर सेवा पर एक ही टैक्स लगेगा। जीएसटी आने से कर चोरी पर लगाम लगेगा एवं पूरे भारत में सभी वस्तुओं के मूल्य एक समान रहेंगे जिससे सामग्री सस्ती होगी। इस एकरूपता को भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए सरकार ने एक हथियार के रूप इस्तेमाल किया है।

इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने में निम्नलिखित व्यवस्था को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है –

1 ई–पेमैंट या भुगतान
2 बायोमिट्रिक प्रणाली या व्यवस्था
3 जीपीएस

भ्रष्टाचार मुक्त भारत को बनाने के उपाय को बृहत रूप से निम्न तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है – 1. निवारक 2. दण्डात्मक 3. प्रोत्साहन

निवारक उपायों से प्रशासनिक सुधारों की मुख्य भूमिका है। कार्य प्रणाली में पारदर्शिता व ईमानदारी का समावेश करना निवारक उपायों की नींव है। दण्डात्मक उपायों में नियम व कानून प्रभावी जांच, विभागीय अनुशासनात्मक कार्यवाही आदि उपायों का समावेश है। प्रोत्साहन उपाय व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों की स्थापना, सामाजिक चेतना से संबंधित हैं।

इस तरह से हम कह सकते हैं कि यहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, गुरू नानकदेव, गुरू गोविन्द सिंह तथा महर्षि बाल्मीकी, संत कबीर, संत रविदास, संत तुकाराम जैसे महापुरुष पैदा हुए। हम जीवन रूपी पुष्प से माँ भारती की आराधना करेंगे एवं मेरा लक्ष्य– ''भ्रष्टाचार मुक्त भारत'' बनाने का सपना साकार करने का प्रयास करेंगे। ❑

शहीद चन्द्रशेखर आजाद

गौरव दत्त*

वो सत्रह हजार काटेंगे, मैं सत्रह लाख लगा दूंगा
गुरु गोविन्द जी ने यही कहा था,
मैं चिड़िया नाल बाज़ लड़ा दूंगा।
चाणक्य के कथन का मान बढ़ा दूंगा,
प्रलय, की तो जाने सबका मालिक,
मैं स्वर्णिम भारत का निर्माण करा दूंगा।

सिर्फ ''मैं'' के लिए जीना, हमारे संस्कार नहीं
जन–जन में देशभक्ति का भाव जगा दूंगा
जय जवान, जय किसान का मान बढ़ा दूंगा।
मैं को तुम मैं न समझना, इस ''मैं'' में, हम सब आते हैं
भाव यदि तुम समझ गए तो
मैं ''स्वर्णिम भारत'' का इतिहास लौटा दूंगा।

* सहायक प्रबंधक (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम के अंशधारियों की 56वीं वार्षिक साधारण बैठक

राजभाषा के क्षेत्र में निगमित कार्यालय को प्राप्त पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14.09.2018 को निगम की त्रैमासिक पत्रिका 'भंडारण भारती' को वर्ष 2017–18 के लिए **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** (गृह पत्रिका) के अंतर्गत 'क' क्षेत्र में माननीय उपराष्ट्रपति महोदय द्वारा **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया।

उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा शील्ड योजना के अन्तर्गत वर्ष 2017–18 के दौरान निगम को राजभाषा नीति के **उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार** माननीय मंत्री जी द्वारा प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा वर्ष 2017–18 के लिए निगम की त्रैमासिक पत्रिका **'भंडारण भारती'** को उत्कृष्ट गृह पत्रिका का **प्रथम पुरस्कार** प्रदान किया गया।

कॉस्ट एकाउंटिंग में उत्कृष्टता पुरस्कार

निगम को इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउन्टेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा वर्ष 2017 के लिए एक्सीलेंस इन कॉस्ट मैनेजमेंट–2017 केटेगिरीः ट्रान्सर्पोटेशन एंड लॉजिस्टिक (सर्विस सेक्टर) का तृतीय पुरस्कार दिनांक 16.10.2018 को माननीय रेल मंत्री महोदय से प्रबंध निदेशक महोदय ने प्राप्त किया।

निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

निगमित कार्यालय में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा

निगमित कार्यालय द्वारा राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई तथा गुवाहाटी को नराकास द्वारा पुरस्कार

केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) चेन्नई की ओर से वर्ष 2017–18 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु लघु कार्यालय की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी को भी नराकास द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय कार्य निष्पादन हेतु प्रशस्ति पत्र पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

सीटीटी तिरूवोट्टियूर में डीपीई सुविधा का प्रचालन

निगम के प्रबंध निदेशक तथा मुख्य आयुक्त कस्टम, चेन्नई कंटेनर ट्रांसिट टर्मिनल, तिरुवोट्टियूर में प्रत्यक्ष बंदरगाह प्रवेश (डीपीई) सुविधा का उद्घाटन करते हुए

निगम के प्रबंध निदेशक सैंट्रल वेअरहाउस, पुद्दुचेरी में पहली ई–एनडब्ल्यूआर का उद्घाटन करते हुए

निगम के प्रबंध निदेशक पहली ई–एनडब्ल्यूआर प्रदान करते हुए

क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़े की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़े की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

क्षेत्रीय कार्यालय, पंचकुला

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

निगमित कार्यालय-4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास, नई दिल्ली-110016

केन्द्रीय भण्डारण निगम द्वारा सरकारी एवं निजी संस्थानों के लिये उत्तम कीट नियंत्रण सेवाएं प्रदान किया जाना

ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
OHSAS 18001:2007
भारतीय पैस्ट कंट्रोल एसोसिएशन का सदस्य

- प्रधूमन (फ्यूमीगेशन) सेवाएं
- सामान्य कीट नियंत्रण
- चूहों पर नियंत्रण
- दीमक विरोधी उपचार
- सूक्ष्म जीवाणु विसंक्रमण
- खर–पतवार प्रबंधन
- वैक्टर नियंत्रण

कृपया संपर्क करें:
डॉ. सिद्धार्थ रथ
सहायक महाप्रबंधक (पी.सी.एस.)
मोबाइल नं. : 8826988762
ई–मेल : cwcpcs07@gmail.com
वेबसाइट : www.cewacor.nic.in

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016